एक्स से

हमारे राष्ट्र की स्थापना इस सिद्धांत की बुनियाद पर की गई थी कि अमेरिका में कोई राजा नहीं है, लेकिन डोनाल्ड ट्रंप के सुप्रीम कोर्ट ने उनके राजा बनने का मार्ग प्रशस्त कर दिया है। हमें इसे रोकना होगा- जो बाइडन/ अमेरिकी राष्ट्रपति

जनादेश से सबक लें सांसद

शायद आप भी मेरी तरह राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई बहस से दहल गए होंगे। सांसदों और सदन के नेताओं से उम्मीद की जाती है कि वे जिम्मेदारी भरे व्यवहार का प्रदर्शन करेंगे, लेकिन हुआ इसका उल्टा। ऐसा लग रहा था कि सत्ता पक्ष अपेक्षित परिणाम न मिलने की वजह से आक्रमण को ही बचाव मान रहा है। इसके विपरीत विपक्ष प्रतिरोध के बजाय प्रतिशोध की मुद्रा में दिखाई पड़ा।

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

शशि शेखर

आजकल

फ्रांस के इतिहास में 8 नवंबर, 1793 की वह दोपहर एक दर्दनाक वाकये के चलते उन पन्नों पर दर्ज है, जिन्हें तवारीख खुद तकलीफ के साथ याद करती है। उस दिन जेन मैरी रोलैंड को गिलोटिन पर चढ़ाया गया था। उनके आखिरी अल्फाज थे- 'ओ आजादी, तेरे नाम पर कैसे-कैसे जुल्म ढाए गए!' मुझे संसद की कार्यवाही देखते वक्त मैडम मैरी अक्सर याद आती हैं और मन में कौंधता है- हे लोकतंत्र, तेरे नाम पर...!

लोकतांत्रिक व्यवस्था से चुनकर जनतंत्र के सबसे पवित्र प्रासाद में पहुंचे हमारे सांसद कैसा आचरण करते हैं? ट्यूब के अंतरिक्ष में जब कोई शोधार्थी वर्षों बाद इस तमाशानुमा बहस को देखेगा, तो क्या कहेगा?

अगर वह बहुत सकारात्मक रुचि-अभिरुचि का व्यक्ति हुआ, तो शायद उसे फ्रांस का उदाहरण याद आ जाए। वहां 1789 में राज्य-क्रांति हुई थी। इसकी शुरुआत अजब-गजब थी। राजा से रोटी की मांग करते अनियोजित तौर पर इकट्ठा हुए लोगों के ऊपर पुलिस ने वर्साय में गोली चला दी थी। अपने साथियों के शव कंधों पर लाद लोग पेरिस लौटे थे। उसी एजेंडा रहित बदहाल भीड़ ने मशहूर खगोलविद् जीन-सिल्वेन बैली की सदारत में उस दिन टेनिस कोर्ट पर जो शपथ ली, उसने धरती से राजतंत्र की विदाई की शोकांतिका लिख दी। हालांकि, फ्रांस को अपनी नई व्यवस्था गढ़ने में अराजकता भरे पचास वर्षों से गुजरना पड़ा। खुद मैरी उसका शिकार हुईं।

हमारी संसद और सांसद आज नहीं तो कल, इस मर्म को समझ जाएंगे। ऐसा कहने की सबसे बड़ी वजह यह है कि हम फ्रांस, चीन या रूस की तरह नहीं हैं। ईसा से सदियों पहले हमारे यहां लोकतंत्र की जो बेल रोपी गई थी, उसे 15 अगस्त, 1947 को अपने नसीब से साक्षात्कार का सौभाग्य हासिल हुआ। तब से आज तक हमारी संसदीय व्यवस्था अपनी खुजुर खुद-ब-खुद गढ़ रही है। भारत के साथ या आसपास जन्मे पड़ोसी मुल्कों का हाल देख लीजिए, स्थिति स्पष्ट हो जाएगी।

हम कुछ लोगों की उम्मीद के मुताबिक भले सरपट न दौड़ रहे हों, पर अपने हक-हुकूक को लेकर खासे जागरूक हैं।

पिछले महीने संपन्न हुए चुनाव का उदाहरण ले लीजिए। मतदान की तारीखें घोषित होने तक कौन सोचता था कि पिछली दो बार से सत्ता की चौहद्दियों पर पूरी मजबूती से काबिज भारतीय जनता पार्टी तीसरी बार बहुमत हासिल करने से वंचित रह जाएगी? क्या नहीं था उसके पास? प्रधानमंत्री मोदी का सक्षम नेतृत्व, सबसे बड़ा पार्टी संगठन और अकूत संसाधन। मुख्य विपक्षी पार्टी कांग्रेस उसके समक्ष कहीं ठहरती नहीं नजर आती थी। छोटे-मोटे क्षेत्रीय दलों की तो बिसात ही क्या थी, पर वे ही भाजपा के विजय-रथ की सबसे बड़ी बाधा साबित हुए।

यह जनादेश दोनों पक्षों को क्या संदेश देता है?

सत्तारूढ़ दल के लिए साफ पैगाम है कि आपको अपनी रीति-नीति फिर से गढ़नी होगी। चुनावी राजनीति के लिए आपने जो रसायन बनाया था, वह पहले जैसा कारगर नहीं रहा। इसी तरह, विपक्ष के लिए सबक है कि इतराइए मत। आप आगे बढ़े हैं, पर अभी भारतीय जनता पार्टी की कुल सीटों से कम हैं। सत्ता में वापसी के लिए आपको बहुत मेहनत करनी है।

इन सबक और संदेशों का पहला इम्तिहान संसद में होना था। इस परीक्षा में कौन पास हुआ और कौन फेल?

शायद आप भी मेरी तरह राष्ट्रपति के अभिभाषण पर हुई बहस से दहल गए होंगे। सांसदों और सदन के नेताओं से उम्मीद की जाती है कि वे जिम्मेदारी भरे व्यवहार का प्रदर्शन करेंगे, लेकिन हुआ इसका उल्टा। ऐसा लग रहा था कि सत्ता पक्ष अपेक्षित परिणाम न मिलने की वजह से आक्रमण को ही बचाव मान रहा है। संभवतः ऐसा पहली बार हुआ है, जब सत्ता पक्ष ने विपक्षी आचरण के खिलाफ पहले सत्र में ही निंदा प्रस्ताव पारित करा दिया।

इसके विपरीत विपक्ष प्रतिरोध के बजाय प्रतिशोध की मुद्रा में दिखाई पड़ा। मसलन, महुआ मोइत्रा अच्छा बोलती हैं। उनकी शैली जबरदस्त है और लहजा धारदार। उन्होंने तार्किक दृष्टि से अपनी बात कहनी शुरू की, पर यह कहना भी नहीं भूलीं कि आपने मुझे इस सदन से बाहर करने की जो गलती की थी, उसकी भारी कीमत चुकाई। महुआ ने कहा, 'पिछली बार जब मैं यहां बोलने के लिए खड़ी हुई थी, तो मुझे बोलने नहीं दिया गया। लेकिन सत्ताधारी दल ने एक सांसद की आवाज दबाने की बहुत भारी कीमत चुकाई है। मुझे बैठाने के चक्कर में जनता ने आपके 63 जन को 'परमानेंटली' बैठा दिया।' इसी तरह, पिछली बार तथाकथित 'अमर्यादित आचरण' के लिए जो सौ से अधिक सांसद निलंबित किए थे या जिनकी सदस्यता खारिज कर दी गई थी, वे भी जैसे बदला चुका रहे थे। नतीजतन, दोनों सदन की आसंदियों पर बैठे महानुभावों को सीधे आक्षेप झेलने पड़े।

क्या पक्ष-विपक्ष के नेताओं को अगले पांच साल के लिए इस सदन में गंभीर चिंतन नहीं करना चाहिए?

उनके पास विचार-मंत्रणा के लिए तमाम मुद्दे हैं। वे जिस नई दिल्ली में रहते हैं, पिछले हफ्ते तक उसका कंठ पानी की कमी से सूख रहा था। यहां पहली बारिश भी राहत नहीं, आफत लेकर आई। कुछ ही घंटे में राजधानी के तमाम हिस्से जलाशय बन गए। आधा दर्जन से अधिक लोगों को जान गंवानी पड़ी और करोड़ों की संपत्ति बर्बाद हो गई थी। इससे पहले जल संकट के दौरान पानी के लिए गर्मियों में बाकायदा कत्ल हुआ और खून बहा था।

हमारे सांसद जिस महानगर में रहते हैं, अगर वही बेहाल है, तो संसद देशवासियों के लिए खुशहाली के सपने कैसे बुन सकती है? देशहित के कई मुद्दों पर दोनों पक्षों में आमराय बनानी होती है। जब प्रतिस्पर्द्धा निजी रंजिश को हवा दे रही हो, तो इसकी उम्मीद कैसे की जा सकती है?

प्रतिशोध और प्रतिकार की यह प्रवृत्ति सिर्फ सदन के अंदर नहीं दिख रही। बदले की राजनीति देश के विभिन्न हिस्सों में अलग-अलग तरीके से आकार ले रही है। गुजरी जून में सत्ताबदर हुए जगन रेड्डी के खिलाफ आंध्र प्रदेश के नए निजाम की कार्रवाई इसका उदाहरण है। जगन ने मौजूदा मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू को सलाखों के पीछे धकेल दिया था। अब नायडू उन्हें ध्वस्त करने पर आमादा हैं। इसी तरह, कर्नाटक और तेलंगाना में आरोप है कि कांग्रेस अपने विपक्षियों को उसी अंदाज में 'निपटा' रही है, जैसा आरोप वह दिल्ली की हुकूमत पर लगाती आई है।

सदन के अंदर और बाहर हमारे सत्तानायकों का वह चरित्र और चेहरा लोकतंत्र के लिए शुभ संदेश नहीं देता। इस प्रवृत्ति को रुकना चाहिए, पर इसे थामेगा कौन? यह नेक काम भी तो हमारे 'माननीयों' को करना है।

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

जीना इसी का नाम है

सारा अल-सक्का
डॉक्टर

लाखों फलस्तीनी लड़कियों को राह दिखाती सारा

बमबारी की हर वारदात के बाद अल-शिफा अस्पताल में लाशों और घायलों का ढेर लग जाता। डॉक्टर-सेवादार उनके आगे कम पड़ जाते थे। डॉक्टर भी उस बेबसी में अपने खुदा से माफी मांगते हुए जख्मी लोगों के बीच से उन्हें इलाज के लिए चुनते, जिनको बचाया जा सकता था।

फलस्तीन और इजरायल की जंग आज भी जारी है। अक्तूबर 2023 से 19 जून, 2024 तक गाजा में लगभग 38,000 लोग अपनी जान गंवा चुके थे। उसके बाद भी बेगुनाहों की लाशों की गिनती रुकी नहीं है और किसी रोज एकमुश्त एक नया आंकड़ा हमें पढ़ने को मिलेगा। कितने बेबस होंगे वहां के बाशिंदे! जिन्हें सहूलियत मिली पलायन करने की, वे थोड़े-से लोग तो वहां से निकल गए, मगर जो कहीं जा नहीं सकते, वे मौत से दोहरी लड़ाई लड़ रहे हैं। एक तरफ इजरायली फौज की गोलियां हैं, तो दूसरी ओर भूख। मगर ऐसे मुश्किल हालात में भी कई फलस्तीनी अपने देशवासियों का हौसला बने हुए हैं। डॉक्टर सारा अल-सक्का उन्हीं में से एक हैं।

सन् 1992 में गाजा पट्टी में पैदा हुईं सारा का बचपन से ही ख्वाब था कि वह एक काबिल डॉक्टर बनें। परिवार बेटी के साथ मजबूती से खड़ा हुआ, तो उसे ऊंची परवाज भरने के मौके भी मिले। अपने स्कूली नतीजों से सारा ने घरवालों को कभी निराश नहीं किया और फिर 2010 में वह दिन भी आया, जब उन्हें इस्लामिक यूनिवर्सिटी, गाजा के मेडिकल पाठ्यक्रम में दाखिला मिल गया। साल 2015 में वहां से मेडिसिन की पढ़ाई मुकम्मल करने के बाद वह छोटे नर्सिंग होम से जुड़कर मरीजों की सेवा में जुट गईं। मगर सारा का सपना अपने पेशे में एक ऊंचा मुकाम हासिल करना था। लिहाजा मेडिकल पेशे से जुड़ी कार्यशालाओं में वह लगातार भाग लेती रहीं और वहां से उन्होंने खूब अनुभव बटोरे।

इसके बाद सारा की नई मंजिल थी, लंदन की प्रतिष्ठित क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी। यहां से उन्होंने 'लेप्रोस्कोपिक सर्जरी ऐंड सर्जिकल स्किल्स' में पिछले ही साल अगस्त में एमएस की डिग्री हासिल की। यह सिर्फ उनके बचपन के सपने का साकार हो जाना नहीं था, फलस्तीन की तारीख में एक रोशन पन्ने का खुलना भी था, क्योंकि सारा गाजा की पहली महिला सर्जन बन गई थीं। वह चाहतीं, तो लंदन में ही अपने लिए बेहतर मौके तलाश कर सकती थीं या दुनिया के किसी भी पुरअमन इलाके में जाकर बस सकती थीं, मगर उन्होंने वतनपरस्ती की राह चुनी और वह गाजा लौट आईं।

लंदन में पढ़ाई करते हुए सारा ने कई सपने संजोए थे कि वह अपने इलाके में स्वास्थ्य सेवाओं को सुधारने के लिए काफी मेहनत करेंगी और एक दिन अपना क्लिनिक खोलेंगी। क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी से एमएस की डिग्री ने गाजा के सबसे बड़े स्वास्थ्य केंद्र अल-शिफा में सारा को आसानी से जगह दिला दी थी। वह काफी खुश थीं। मगर दो महीने बाद ही हमास की निर्मम हिमाकत पर बर्बर इजरायली प्रतिक्रिया ने सारा के सारे सपने जमींदोज कर दिए। अब तो उनकी सबसे बड़ी चिंता खुद बचने और दूसरों को बचाने की है।

वह 7 अक्तूबर का दिन था। सारा का उस दिन साप्ताहिक

अवकाश था। वह अपनी सबसे छोटी बहन को स्कूल पहुंचाने के लिए तैयार हो रही थीं। तभी अचानक बमबारी की आवाजें सुनाई पड़ने लगीं। उन्होंने बहन को स्कूल जाने से रोक दिया। सारा ने फौरन मोबाइल फोन उठाया, तो हमास के हमले के बाद इजरायली बदले की खबर हर तरफ पसरी हुई मिली। वह यह सब कुछ ठीक से समझ पातीं, उससे पहले ही अस्पताल से फौरन ड्यूटी ज्वॉइन करने का आदेश आ गया। शिशु प्रजनन वार्ड को छोड़ दें, तो अस्पतालों के नजारे अमूमन खुशगवार नहीं होते, क्योंकि हर तरफ स्वस्थ होकर विदा होने वालों के मुकाबले पीड़ित मरीजों और चिंतित तीमारदारों की तादाद अधिक होती है। मगर उस रोज तो अल-शिफा अस्पताल की दीवारें भी कराह रही थीं। चारों ओर लाशों पर मातम और घायलों की चीख-पुकार से कोहराम मचा था। सारा फौरन टीम के साथ इलाज में जुट गईं।

इजरायल एक लंबे मनसूबे के साथ हमलावर हुआ था, इसीलिए उसने फलस्तीनियों को उत्तरी गाजा खाली करके दक्षिणी इलाके में जाने का हुक्म सुना दिया। मरता क्या न करता? हजारों लोग मोहलत के उन 24 घंटों में जान बचाकर दक्षिणी गाजा की ओर भागने लगे। मगर सारा ने वहीं रुकने का फैसला किया। बमबारी की हर वारदात के बाद अल-शिफा में लाशों व घायलों का ढेर लग जाता। डॉक्टर-सेवादार उनके आगे कम पड़ जाते थे। इस धरती पर दूसरा भगवान कहे जाने वाले डॉक्टर भी उस बेबसी में अपने ईश्वर से माफी मांगते हुए घायलों के बीच से उन्हें इलाज के लिए चुनते, जिनको बचाया जा सकता था। अगले 34 दिनों तक बगैर घर गए और बिना किसी विश्राम के डॉक्टरों की टीम जुटी रही। सारा अल-सक्का भी उनमें से एक थीं।

एक दिन सारा ऑपरेशन कक्ष में थीं, तभी प्रसव-पीड़ा से कराहती एक महिला उसमें दाखिल हुई। उस समय सारा को किसी स्त्री रोग विशेषज्ञ की दरकार थी, क्योंकि वह डिलिवरी काफी जटिल थी, शिशु की गर्दन गर्भनाल में फंस गई थी। मगर सारा को किसी विशेषज्ञ की मदद नहीं मिली, क्योंकि बाहर बमबारी हो रही थी। आखिरकार अपने रब को याद करते हुए उन्होंने खुद ही ऑपरेशन करने का फैसला किया। यह उनकी जिंदगी का पहला ऐसा ऑपरेशन था। सारा बच्ची और मां, दोनों की जान बचाने में कामयाब रहीं। अभिभूत मां ने अपनी बच्ची का नाम रखा- सारा!

डॉक्टर सारा को किसी विशेषज्ञ की मदद नहीं मिली, क्योंकि बाहर बमबारी हो रही थी। आखिरकार उन्होंने खुद ही ऑपरेशन करने का फैसला किया। यह उनकी जिंदगी का ऐसा पहला ऑपरेशन था। वह बच्ची और मां, दोनों को बचाने में सफल रहीं। अभिभूत मां ने अपनी बच्ची का नाम रखा- सारा!

इजरायली टुकड़ी जब अल-शिफा को ही निशाना बनाने लगी, तब सारा के लिए वहां से निकलने के सिवा दूसरा कोई चारा नहीं बचा। मगर रफा (दक्षिण गाजा) अपने परिवार के पास जाते समय भी वह उन दोनों मां-बेटी को साथ ले जाना नहीं भूलीं, जिनकी उन्होंने जान बचाई थी। सारा अभी संयुक्त राष्ट्र की एक संस्था के तहत सेवा कर रही हैं। ऐसी जांबाज बेटियां किसी भी देश और समाज की थाती से कम नहीं। ऐसे में, *बीबीसी* ने सारा को 2024 की सौ प्रभावशाली महिलाओं में शामिल किया है, तो वह वाकई इसकी हकदार हैं!

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

नारायण गुरु
धर्मगुरु व समाज सुधारक

अंधविश्वासों के बीच भी चमकती साधुता

यह बात किसी से छिपी नहीं थी कि कुछ तो कथित साधुओं ने ही इतना गलत व्यवहार शुरू कर दिया था कि साधारण बुद्धि के बहुत लोग उन्हें अश्रद्धा से पत्थर मारने लगे थे, तो दूसरी ओर, समाज में अशिक्षा, अज्ञानता और बेशर्मी भी सिर चढ़ी हुई थी।

जगत में वस्तुतः विश्वास का ही सूर्य आलोकित होता है, लेकिन उस पर अक्सर अंधविश्वास के बादल छाए रहते हैं। अंधविश्वास के अंधेरे में ही परस्पर भेद की भयानक खाइयां खोदी जाती हैं, जिनमें गिरकर समाज रोते हुए या हंसते हुए सांसें लेता है। रोता वह है, जिसके पास हंसने के मौके बराबर हैं और हंसता वह है, जिसे लगता है कि पूरी खाई उसके कब्जे में है। ऐसी खाई में पसरी कारगुजारियां तो देखिए, विश्वास के दरबार में सन्नाटा है और अंधविश्वास की दुकान पर जानलेवा भीड़-भगदड़।

वैसे, अंधविश्वास से उपजे व्यवहार का इतिहास पुराना है। इसी इतिहास में एक दिन केरल के गांव चेंपाझंथी में जटाजूटधारी साधु गांव की सड़क से चुपचाप चले जा रहा था। कुछ लड़के उसे छेड़ रहे थे और कुछ पत्थर भी फेंक रहे थे, पर वह साधु उद्वेदता का उत्तर दिए बिना अपनी धुन में चले जा रहा था। हालांकि, यह बात छिपी नहीं थी कि कुछ तो कथित साधुओं ने ही इतना गलत व्यवहार शुरू कर दिया था कि लोग उन्हें अश्रद्धा से पत्थर मारने लगे थे, तो दूसरी ओर, समाज में अशिक्षा, अज्ञानता और बेशर्मी भी सिर चढ़ी हुई थी। खैर, कोई कथित साधु होता, तो जरूर जवाब देता, पर वह चुपचाप साधुता का कवच ओढ़े चले जा रहा था, मानो कुछ भी गलत नहीं हो रहा।

वहां भटके-बदमाश लड़कों से अलग उसी गांव का एक शांत लड़का भी था, जो साधु का हाल देखकर दुखी हो रहा था। उससे ज्यादा देखा नहीं गया, तो वह चुपचाप नजर नीची किए साधु के पीछे-पीछे चलने लगा। वह अनायास सोचने लगा कि वह पीछे-पीछे चलेगा, तो साधु को लड़के शायद पत्थर कम मारेंगे। ऐसा ही हुआ। जब पत्थर कुछ कम हुए, तो साधु ने पलटकर देखा कि पीछे एक लड़का चला आ रहा है। गौर किया, तो लड़के की आंखों से आंसू बह रहे थे और चेहरे पर रोने की भंगिमाएं मचल रही थीं। साधु ठिठक गया, 'बच्चे, तुमने तो पत्थर नहीं मारा, पर तुम रो क्यों रहे हो?' यह सवाल सुन लड़का फूट-फूटकर रोने लगा और दोबारा पूछने पर बोला, 'ये लड़के आपको बहुत सता रहे थे, पर आपके बचाव में मैं कुछ भी नहीं कर पा रहा था। मुझे बहुत बुरा लगा, इसलिए रोने लगा।'

यह उत्तर सुनकर साधु भाव-विभोर हो गया, उसने लड़के से परिचय पूछा और कहा कि मुझे अपने माता-पिता के पास ले चलो। दोनों घर पहुंचे, वहां भी साधु ने लड़के को खूब आशीर्वाद दिया और कहा, 'इस स्नेहिल लड़के में बहुत सद्गुण हैं। यह तो अभी से अलग सोचने और अन्याय का मार्मिक विरोध करने का सलीका जानता है। यह जरूर बड़ा आदमी बनेगा।'

अपने माता-पिता के दुलारे नानू अर्थात नारायण पर इस घटना का बहुत गहरा असर हुआ। कहा जाता है कि अगर किसी बच्चे को शुरू में ही या बार-बार यह एहसास दिलाया जाए कि तुम्हें एक दिन बड़ा आदमी बनना है, तो वह बच्चा वाकई बड़ा आदमी बनने के लिए दिलो-जान से कोशिशें करता है।

नारायण में इंसानियत के प्रति शुरू से ही बहुत लगाव था। जब उनके वैद्य चाचा अस्पृश्यता की प्रथा लागू करने के लिए मुस्तैद रहते थे, तब नारायण दौड़-दौड़कर गरीबों-दलितों को गले से लगाते थे। वह अस्पृश्यता को मूर्खता मानते थे। उन्हें दिखावा बिल्कुल पसंद नहीं था। सहजता ही सही जीवन और विश्वास की ओर ले जाती है, जबकि दिखावा अंधविश्वास की ओर धकेलता है। नारायण आगे चलकर नारायण गुरु (1856-1928) के नाम से बहुत प्रसिद्ध हुए। आध्यात्मिक ज्ञान और सामाजिक समानता को बढ़ावा देने के लिए उन्होंने केरल के जाति-ग्रस्त समाज में अन्याय के खिलाफ सुधार आंदोलन का नेतृत्व किया। वह बार-बार कहते थे, सभी मनुष्यों के लिए एक जाति, एक धर्म और एक भगवान होना चाहिए। उन्होंने सबके लिए अनेक स्कूल और मंदिर खोले, कोई भेद नहीं किया। वह जितने धार्मिक थे, उतने ही व्यावहारिक भी। साल 1905 में उन्होंने भारत में पहली बार कोल्लम में अखिल भारतीय औद्योगिक एवं कृषि प्रदर्शनी का आयोजन किया था। वह संदेश देते थे कि ज्ञान से प्रबुद्ध बनें, संगठन से मजबूत बनें और उद्योगों से समृद्ध बनें। उनके यहां ढकोसलों का एक कतरा नहीं था। उनके शिष्य विनम्रता की मिसाल थे। गुरु को एक मंदिर में जाने से रोका गया, तो उनके शिष्यों ने प्रेम व कलम का सहारा लिया और विरोधियों को पसीजने के लिए मजबूर कर दिया।

गुरु ने बताया कि दया, प्रेम, करुणा, ये तीनों मूलतः एक ही हैं और इन्हीं से जीवन निर्देशित होना चाहिए। उन्होंने एक अद्वैत कविता *दैव दसकम* की रचना की, जो आज केरल में प्रसिद्ध सामुदायिक प्रार्थना है- हे ईश्वर, आप हम पर यहां-वहां से सदैव दृष्टि रखिए और कभी हमारा हाथ न छोड़िए।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

जो आजाद, वही साहित्य में आबाद

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी
हिंदी साहित्यकार

वह कुछ देर 'इधर' के हो लेते हैं, तो कुछ देर 'उधर' के हो लेते हैं। वह कुछ इधर से ले लेते हैं, तो कुछ उधर से भी ले लेते हैं और इसी तरह साहित्य में अपनी जगह और जरूरत बनाए रखते हैं। लेकिन, ऐसा यूं ही नहीं हो जाता। इसके लिए बड़ी प्रतिभा चाहिए। बहुत से लेखक ऐसे होते हैं, जो सचमुच *त्वदीयं वस्तु गोविंदम् तुभ्यमेव समर्पये* के भाव वाले होते हैं। ऐसे लेखक कभी 'लेफ्ट' से और कभी 'राइट' से कुछ न कुछ लेते रहते हैं और फिर उसे ऐसी 'फॉर्म' में पेश करते हैं कि लेफ्ट वाले को लेफ्ट की लगती है और राइट वाले को राइट की लगती है।

हिंदी में ऐसे प्रतिभाशालियों की कमी नहीं। ऐसे प्रतिभ बड़े 'प्रैक्टिकल' होते हैं। वे हवा के रुख को ताड़ने में एक्सपर्ट होते हैं। इधर हवा का रुख बदला, उधर वे बदले। उसी के हिसाब से वे कभी इधर हो लेते हैं, कभी उधर हो लेते हैं, फिर जो जैसा मिला, उसके हिसाब से वैसी रचना ठेल देते हैं! आप कहेंगे कि ऐसे लोग बड़े ही अवसरवादी होते हैं, लेकिन मैं कहूंगा कि ऐसा करना भी सबके बूते का नहीं है। इसके लिए उच्च कोटि की प्रतिभा चाहिए और उतनी ही व्युत्पन्न बुद्धि भी, जो साहित्य के सारे अंतर्विरोधों को एक ही वक्त में साध सके।

मैं ऐसे लेखकों को ही असली लेखक मानता हूं, जो हर मौसम में, हर ऊंच-नीच में अपना रास्ता बनाते चलते हैं और अपना उल्लू सीधा करके रहते हैं। यूं कुछ ऐसे 'कमिटेड' लेखक भी होते हैं, जो एक बार किसी विचार के खूंटे से बंधे, तो जिंदगी भर के लिए बंधे रह गए। न कभी इधर देखा, न उधर देखा। देखा, तो खूंटे को देखा और उसी को अपनी तकदीर मान लिया। ऐसे लेखक लेखक कम, क्लर्क अधिक होते हैं।

असली प्रतिभाशाली के लिए ऐसा कोई खूंटा नहीं बना होता, जो उसको बांध सके। ऐसा लेखक एकदम आजाद पंछी होता है। तभी तो वह इधर का उधर और उधर का इधर कर सकता है। आज ऐसे ही लेखकों की बहुतायत है। वे लेफ्ट के बीच लेफ्ट बने रहते हैं, राइट के बीच राइट और हमेशा लेफ्ट-राइट करते रहते हैं, लेकिन किसी से 'फाइट' नहीं करते। वे दूर की सोचते हैं, इसीलिए चाहे लेफ्ट में रहें या राइट में, लोगों को हमेशा 'राइट' नजर आते हैं।

वह अवसरवाद नहीं है। वह आज के साहित्य का नया 'टूल किट' है। जो विचार की 'जेवड़ी' में बंध गया, वह बंध गया, जो इसको तोड़कर भाग लिया, वह बन गया। ऐसे एक नहीं, अनेक उदाहरण हैं। ऐसे लोग बहुत दिनों तक साहित्य में इधर से उधर और उधर से इधर करते रहे और जब शिखर पर पहुंचे, तो उनका ऐसा जादू चला कि लेफ्ट वाले भी चरण छूते दिखते और राइट वाले भी उनके चरणों में पड़े दिखते। मैं ऐसे अवसरवाद को साहित्यकार का सबसे बड़ा गुण मानता हूं। इसके विपरीत, जो अपनी पर अड़े रहते हैं, वे वहीं के वहीं सड़ते रहते हैं। जो आजाद होते हैं, वे ही साहित्य में आबाद होते हैं।

सबसे सुंदर अवसरवाद तो तब सामने आया, जब दशकों लड़ने के बाद विचारधारावादी और कलावादी एक दिन एक मंच पर आकर हाथ मिलाते नजर आए। कुछ विचारधारावादी कला को सराहने लगे, कुछ कलावादी विचार को सराहने लगे। यहां भी कुछ ने इधर से लिया, कुछ ने उधर से लिया और एक बार फिर सिद्ध किया कि बिना इधर-उधर किए साहित्यकार नहीं बना जा सकता और आज उनमें ऐसी मैत्री है कि यही नहीं मालूम पड़ता कि अब कौन किधर है?

इसीलिए मेरा मानना है कि साहित्य हमेशा 'हाइब्रिड' होता है। वह 'कला' और 'बला' का 'मिक्स्चर' होता है, जिसमें कहां-कहां से क्या-क्या तो मिलता व मिक्स होता रहता है और वह क्या से क्या तो बनता रहता है। जिस तरह आज कुछ भी शुद्ध नहीं, उसी तरह साहित्य भी शुद्ध नहीं होता। जिस तरह हर चीज में मिलावट होती है, उसी तरह साहित्य में भी होती है, पर यह मिलावट भी अच्छी होती है, क्योंकि इसी से साहित्य आगे बढ़ता है।

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

'बूम-बूम' ने ऐसे पलटी हारी बाज़ी

इंडियन क्रिकेट टीम के लिए 29 जून 2024 की तारीख को इतिहास के पन्नों में अमर करने में बुमरा का अहम योगदान रहा। वेस्टइंडीज का मैदान...सामने साउथ अफ्रीका की टीम और T20 वर्ल्ड कप का लगभग हारा हुआ फाइनल मैच। मैच का 15वां ओवर खत्म होने के बाद मैदान पर भारतीय खिलाड़ियों के कंधे झुके हुए थे। फैंस भी परेशान थे। सबकी नजरों के सामने वे तमाम फाइनल्स फिर से आने लगे जो भारत ने हाल ही में गंवाए थे। इसमें 2021 का वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल, 2023 का वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल और 2023 का वन-डे वर्ल्ड कप फाइनल शामिल है। साउथ अफ्रीका को सिर्फ 30 गेंद पर 30 रन चाहिए थे। अब लगभग सब मान चुके थे कि फाइनल की हारी हुई लिस्ट में एक नाम 2024 के T20 वर्ल्ड कप का भी जुड़ जाएगा। लेकिन कैप्टन रोहित शर्मा और पूरी टीम से लेकर समीक्षकों और फैंस तक को पता था कि इंडियन क्रिकेट टीम के तरकश का सबसे अचूक अस्त्र जसप्रीत बुमरा उनके पास है। इसी बीच रोहित ने बुमरा को गेंद थमाने का फैसला किया। इसके बाद क्रीज पर मौजूद साउथ अफ्रीकी बल्लेबाज हेनरिक क्लासेन और डेविड मिलर ने भी मारकल हॉलिंग्स, एंडी रॉबर्ट्स, कोलिन क्राफ्ट, जोएल गार्नर, मैलकम मार्शल और कर्टली एम्ब्रोज जैसे महान गेंदबाजों के देश में एक और लेजेंड्री गेंदबाज बुमरा की गेंदों को भी वही सम्मान देने का इरादा किया। 16वें ओवर में साउथ अफ्रीकी बल्लेबाज उनके खिलाफ 4 रन ही बना सके। इसका फायदा अगले ओवर में आए हार्दिक को हुआ। उन्होंने पहली ही गेंद पर क्लासेन को आउट कर दिया। फिर बुमरा अगला ओवर लेकर आए। साउथ अफ्रीका के लिए आसान-सा दिखने वाला टारगेट दूर जाता दिख रहा था। लेकिन वह बुमरा के खिलाफ रिस्क लेने से डर रहे थे। यही कारण था कि क्रीज पर नए बल्लेबाज मार्को यानसेन ने भी बुमरा के खिलाफ डिफेंस करना उचित समझा। हालांकि इसका भी कुछ फायदा नहीं हुआ। बुमरा ने उनका डिफेंस भेदते हुए स्टंप्स उखाड़ दिए। 18वें ओवर में उन्होंने सिर्फ 2 रन दिए। 15वें ओवर के बाद जो भारत हार की कगार पर दिख रहा था, वह अचानक से जीत की ओर बढ़ता दिखने लगा। बचे 5 ओवर में से बुमरा को उस समय 2 ओवर करने थे। उन्होंने अपनी गेंदबाजी से मैच का रुख पलट दिया। अंत में न सिर्फ भारत विजयी हुआ बल्कि 11 साल का ट्रॉफी का सूखा भी खत्म हुआ। बुमरा इस जीत के केंद्र में रहे और उन्हें प्लेयर ऑफ द टूर्नामेंट चुना गया।

जसप्रीत बुमरा हाल में टीम इंडिया में तुरुप का इक्का और सबसे बड़े मैच विनर बनकर उभरे हैं। क्रिकेट के जुनून वाले 140 करोड़ के जिस देश में हमेशा से महान बल्लेबाजों को पूजने की परंपरा रही हो, वहां एक गेंदबाज का नायक बनकर उभरना यह साबित करता है कि वह असाधारण क्यों है। बुमरा के जीवन और खेल पर एक नजर डाल रहे हैं अभिषेक उपाध्याय

भारत का यश, प्रीत बुमरा

इंटरनैशनल करियर...

टेस्ट मैच		वन-डे इंटरनैशनल		T20 इंटरनैशनल	
मैच	विकेट	मैच	विकेट	मैच	विकेट
36	159	89	149	70	89
औसत		औसत		औसत	
20.69		23.55		17.74	
इकॉनमी	पारी में बेस्ट	इकॉनमी	पारी में बेस्ट	इकॉनमी	पारी में बेस्ट
2.74	6/27	4.59	6/19	6.27	3/7

मैदान से ही शुरू हुई थी लव स्टोरी

बारबाडोस के मैदान पर हार्दिक पांड्या ने जब अपने ओवर की आखिरी बॉल फेंकी तो भारत की विजय गाथा लिखी जा चुकी थी। T20 वर्ल्ड कप हमारा हो चुका था। मैदान पर उस चहल-पहल में एक खास जोड़ी ने सभी का ध्यान अपनी ओर खींचा था। वे थे जसप्रीत बुमरा और उनकी जीवनसंगिनी संजना गणेशन। बुमरा जहां कम बोलते हैं, अपनी हुनर बताने के लिए यॉर्कर का इस्तेमाल करते हैं, वहीं संजना एक बिंदास एंकर हैं। दोनों की लव स्टोरी की शुरुआत भी मैदान पर ही हुई थी। बुमरा के डेब्यू IPL 2013 सीजन में मैच के बाद संजना उनका इंटरव्यू ले रही थीं। लोगों को लगता है कि दोनों के बीच की ऑन फील्ड केमेस्ट्री तभी से ऑफ फील्ड ड्रामेस में तब्दील होनी शुरू हो गई होगी, लेकिन ऐसा नहीं था। दिनेश कार्तिक को दिए एक इंटरव्यू में बुमरा बताते हैं कि संजना और मैं शुरुआत में एक-दूसरे से बात नहीं करते थे। हम दोनों को एक जैसी समस्या थी। मुझे लगता था कि वह थोड़ी घमंडी हैं और उन्हें मैं थोड़ा घमंडी लगता था। हालांकि 2019 वर्ल्ड कप के दौरान संजना ब्रॉडकास्टिंग टीम का हिस्सा थीं। यहां फिर दोनों ने ऑन फील्ड बातों के साथ ऑफ फील्ड साझेदारी बुननी शुरू की। बुमरा बताते हैं कि दोनों की दोस्ती 2019 में हुई। 2 साल एक-दूसरे का साथ निभाने के बाद दोनों ने 2021 में अपनी साझेदारी को 7 वचनों में बांध लिया। शादी गोवा में हुई। बुमरा अपनी संगिनी की तारीफ करते हुए कहते हैं, 'संजना को क्रिकेट पता है तो हम दोनों खेल के बारे में गहरी बातें करते हैं। इससे मुझे मदद मिलती है।' 29 जून को T20 वर्ल्ड कप फाइनल के दौरान जब टीम के दूसरे प्लेयर अपने पार्टनर से साथ खुशियां बांट रहे थे तो उस समय बुमरा इंटरव्यू दे रहे थे। इंटरव्यू के बाद खुद को आधिकारिक बंधनों से निकालते हुए बुमरा अपनी पत्नी संजना को गले लगा लिया। इस लम्हें को सोशल मीडिया पर बहुत शेयर भी किया गया।

शारीरिक कमजोरी से मज़बूती तक

बुमरा भले ही आज भारतीय टीम की रीढ़ हों, लेकिन जन्म के वक्त वह फिजिकली कमजोर थे। पड़ोसी और उनके परिवार की अच्छी दोस्त दीपल त्रिवेदी ने X पर बताया कि जब उन्होंने शिशु बुमरा को पहली बार गोद में लिया तो वह बहुत कमजोर और पतले थे। वह कमजोर बच्चा हंसने की कोशिश कर रहा था लेकिन हंस नहीं पा रहा था। इसके बाद कमजोर बुमरा को डॉक्टर ने ऑब्जर्वेशन में रखा। अहमदाबाद के अस्पताल में 6 दिसंबर 1993 को जन्मे बुमरा सिर्फ 5 साल के ही हुए थे कि उनके पिता जसबीर सिंह हेपाटाईटिस-बी बीमारी की वजह से उन्हें छोड़कर चले गए। मां दलजीत को घर चलाने के लिए दिन में 16-18 घंटे तक काम करना पड़ता था। इसके बावजूद घर का खर्च चलाना मुश्किल होता था। दीपल लिखती हैं कि परिवार का संघर्ष जारी था, लेकिन बुमरा को सबसे ज्यादा चुनौती का सामना करना पड़ रहा था क्योंकि मां उनके लिए दूध नहीं खरीद पाती थीं। लेकिन उन पर इन बातों का असर नहीं पड़ा। वह सब कुछ छोड़ एक प्लास्टिक की गेंद हाथ में उठाकर खेलते थे। दीपल का मानना है कि बुमरा की कहानी से सबको सीखना चाहिए। वह एक जीता-जागता सबूत है कि जिंदगी में किसी को परिस्थितियों के सामने घुटने नहीं टेकने चाहिए। उनके जैसे खिलाड़ी जो पहले ही जिंदगी से लड़कर जीत चुके हों, उनके लिए ट्रॉफी जीतना सिर्फ उनके करियर पर एक हाईलाइट मार्कर जैसा है।

जब रिजेक्ट हो गया था ऐक्शन

बुमरा की मां एक स्कूल में टीचर थीं। इसी स्कूल में रॉयल क्रिकेट अकैडमी थी थी। अकैडमी चलाने वाले किशोर त्रिवेदी ने बुमरा के टैलेंट को पहचाना। वह हैरान थे कि बुमरा इतने छोटे रनअप के साथ इतनी तेज बॉल कैसे फेंक पा रहे हैं। यह देखते हुए त्रिवेदी ने फैसला किया कि वह बुमरा के ऐक्शन में कोई बदलाव नहीं करेंगे। जल्द ही बुमरा लोकल टूर्नामेंट्स के स्टार गेंदबाज बन गए। त्रिवेदी बताते हैं कि लोकल टूर्नामेंट में बल्लेबाज उनका सामना करने से डरते थे। इस सबके बावजूद उनकी मां दलजीत क्रिकेट करियर को लेकर आश्वस्त नहीं थीं। हालांकि त्रिवेदी ने बुमरा के प्रदर्शन के लिए उनकी मां से 2 साल मांगे। 2010 में वह गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन के अंडर-19 डिस्ट्रिक्ट सिलेक्शन ट्रायल में गए थे। जहां उनका ऐक्शन उनके लिए परेशानी का सबब बना। वहां मौजूद सिलेक्टर्स उनके अजीब ऐक्शन से खुश नहीं थे। हालांकि त्रिवेदी के कहने पर उन्हें रिजर्व खिलाड़ी के तौर पर रखा गया। टूर्नामेंट के आखिरी के मैचों में बुमरा समेत दूसरे खिलाड़ियों को मौका मिला। अपने पहले ही मैच में बुमरा ने 7 विकेट लिए। इसके बाद से उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। 2013 में उन्होंने सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में डेब्यू किया।

दिग्गजों से आंकड़ों में आगे

T20 वर्ल्ड कप जीतने के बाद विराट कोहली ने कहा था कि बुमरा किसी पीढ़ी में एक बार पैदा होने वाले गेंदबाज हैं। इसलिए उन्हें बचाए रखने की जरूरत है। आंकड़े भी इसकी पुष्टि करते हैं। दुनिया में सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले तेज गेंदबाजों की लिस्ट में शामिल जेम्स एंडरसन, ग्लैन मैकग्रा, वसीम अकरम, स्टुअर्ट ब्रॉड और शॉन पोलाक से तुलना करने पर पता चलता है कि बुमरा इन खिलाड़ियों से भी बेहतर हैं। बुमरा अभी तक 195 इंटरनैशनल मैच खेल चुके हैं। इतने ही इंटरनैशनल मैचों में सिर्फ मैकग्रा (499) और शॉन पोलक (432) उनसे आगे हैं। वहीं, अकरम (387), ब्रॉड (382) और एंडरसन (356) बुमरा से पीछे हैं। 195 मैच के बाद बुमरा का स्ट्राइक रेट और औसत इन सभी से बेहतर है। अगर वह इसी स्ट्राइक रेट से गेंदबाजी करते रहे तो वह दुनिया के सबसे सफल गेंदबाज बन सकते हैं।

वसीम अकरम

स्टुअर्ट ब्रॉड

जेम्स एंडरसन

बुमरा की बोलिंग साइंस है सबसे जुदा

आमतौर पर माना जाता है कि तेज रफ्तार से गेंद करने के लिए लंबा रनअप और बड़ी जंप जरूरी है। बुमरा इसमें अपवाद हैं। उनका रनअप दूसरे तेज गेंदबाजों से बेहद छोटा है। वहीं दूसरा फर्क बॉल फेंकने यानी रिलीज में है। किसी दूसरे गेंदबाज के हाथ से जब बॉल छूटती है तो वह आगे की ओर घूमती हुई जाती है या उसमें थोड़ी बैक स्पिन होती है। बैक स्पिन किसी गेंद को ज्यादा स्विंग और सीम पर लैंड करवाने में मददगार होती है। लेकिन बुमरा की गेंदबाजी में बैक स्पिन दूसरे गेंदबाजों से कहीं ज्यादा होती है। साथ ही वह अपने हाई आर्म ऐक्शन में जिस पॉइंट से गेंद रिलीज करते हैं उसमें बल्लेबाजों के लिए गेंद का बाउंस समझना मुश्किल होता है। उनकी गेंद टप्पा खाकर स्किड यानी एक तरह से पिच से टकरा कर फिसल जाती है जिससे उन्हें एक्स्ट्रा पेस के साथ कई बार एक्स्ट्रा बाउंस भी मिलता है। वहीं उनका छोटा रनअप उन्हें लंबे स्पैल के लिए तैयार रखता है। जहां लंबा रनअप गेंदबाजों को थका देता है, वहीं बुमरा का छोटा ऐक्शन लंबे मैच में उनकी एनर्जी बचाता है। ऐक्शन से इतर उन्होंने कई बरसों की मेहनत से अपनी गेंदबाजी में काफी बदलाव भी किए हैं। IPL के शुरुआती बरसों में वह लगातार यॉर्कर करने में सफल होते थे। इस वजह से उन्हें 'यॉर्कर किंग' और 'डेथ स्पेशलिस्ट' के रूप में देखा जाने लगा। हालांकि उन्होंने जल्द ही अपनी गेंदबाजी में और भी वैरिएशन जोड़े। इसमें गेंद को हवा में दोनों तरफ स्विंग करवाने की काबिलियत भी शामिल है। उन्होंने नेचरल इन स्विंग के साथ आउट स्विंग भी सीखी जिसने उन्हें टेस्ट मैच के लिए भी परफेक्ट खिलाड़ी बना दिया। बुमरा के ऐंगल से आती गेंद अक्सर बल्लेबाजों को परेशान करती है। उन्हें रिवर्स स्विंग की कला भी आती है।

विचार विंडो

नई किताबें

अच्छे इलाज के 51 नुस्खे (सेहत)

जिंदगी की भाग-दौड़ में सेहत अक्सर पीछे छूट जाती है। क्या करें कि हम बीमार ही न पड़ें और बीमार पड़ जाएं तो कैसे ठीक से अपना इलाज कराएं - इस बारे में पूरी जानकारी यह किताब देती है। एम्स भोपाल के फाउंडर-डायरेक्टर रहे डॉ. संदीप कुमार ने 40 साल की मेडिकल साइंस की अपनी समझ को इस किताब में उतारा है। सेहत से जुड़ा कोई भी अहम टॉपिक इस किताब में छूटा नहीं है। डॉक्टर के मुताबिक, मोटापा, बीपी, शुगर जैसी लाइफस्टाइल बीमारियों के पीछे मुख्य वजह गलत खानपान और कसरत न करना है।

लेखक: डॉ. संदीप कुमार, अजय कुमार अग्रवाल
प्रकाशक: स्टारडम बुक्स
कीमत: 695 रु. (पेपरबैक) **पेज:** 555

भारत 2024 (संदर्भ ग्रंथ)

अगर आपको अपने देश के बारे में प्रामाणिक जानकारी हासिल करनी है तो यह किताब आपके लिए ही है। इसे भारत सरकार के प्रकाशन विभाग के बोर्ड के विशेषज्ञों ने लिखा है। एक सरकारी प्रकाशन होने के कारण इसमें दी गई जानकारी प्रामाणिक है। यह हर साल छपती है। इसमें देश के विकास से जुड़े सभी आंकड़े अपडेटेड हैं। शहरी से लेकर ग्रामीण भारत, उद्योग से लेकर बुनियादी ढांचे, कला और संस्कृति, तकनीकी और विज्ञान से लेकर अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य, रक्षा, शिक्षा और जन संचार तक की जानकारी एक साथ दी गई है।

प्रकाशक: प्रकाशन विभाग
कीमत: 385 रु. (पेपरबैक)
पेज: 832

द लॉज़ ऑफ ह्यूमन नेचर (मनोविज्ञान)

खुद को जानना चाहते हैं, दूसरों को समझना चाहते हैं तो यह किताब आपके लिए है। मूल रूप से इंग्लिश में लिखी यह किताब बताती है कि हम अपनी कमजोरियों पर काबू पाकर कैसे एक बेहतर इंसान बन सकते हैं। लेखक रॉबर्ट ग्रीन ने उदाहरणों के जरिये समझाया है कि दूसरे लोगों के मुखौटों को भेदकर उनका असली चेहरा कैसे देखें। कुछ कोट्सः अपने ओथेर पक्ष का सामना करें, अपनी ईगो से सावधान रहें, अपनी सीमाएं पहचानें, अपने नजरिये का मूल्यांकन कर उसे ठीक करें, दूसरों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाएं, अपनी नश्वरता पर चिंतन करें।

लेखक: रॉबर्ट ग्रीन
अनुवाद: मदन सोनी
प्रकाशक: मंजुल पब्लिशिंग हाउस **कीमत:** 399 रु. (पेपरबैक) **पेज:** 444

The Marketing Gita (मार्केटिंग)

बिजनेस में कामयाबी सभी को चाहिए। इसके लिए कोई शख्स कहीं नौकरी करके बिजनेस सीखता है तो कुछ लोग बिजनेस स्कूलों में पढ़ाई करते हैं। बिजनेस करते हुए भी बिजनेस सीखा जाता है। एक विकल्प और है। बिजनेस में कामयाबी के टिप्स हमारे प्राचीन भारतीय ग्रंथों में भी छिपे हैं। इन छिपे नगीनों को प्रतीक और सागर ने इस किताब के जरिये हमारे सामने पेश किया है। हमारे प्राचीन ग्रंथों से कहानियों को लेकर इसमें बताया गया है कि किस तरह से बिजनेस में कामयाबी हासिल की जा सकती है, बिजनेस शुरू करते वक्त किन गलतियों से बचना चाहिए।

लेखक: प्रतीक माहेश्वरी, सागर वेंकटेश्वर
प्रकाशक: सृष्टि पब्लिशर्स
कीमत: 449 रु. (पेपरबैक)
पेज: 282

...तो इसलिए है बाबाओं के पास भीड़

हाल में ही यूपी के हाथरस में बेहद दर्दनाक हादसा हुआ। वहां 'भोले बाबा' का सत्संग जारी था। सत्संग का समापन होते ही भगदड़ मच गई। महिलाएं और बच्चे भीड़ के पैरों तले दबते चले गए। इस हादसे में 121 लोगों की मौत हो गई और बहुत-से घायल हैं। इस घटना के बाद तमाम लोग बाबा, प्रशासन और आयोजकों को दोषी ठहरा रहे हैं। सोशल मीडिया पर भी लोग इसी मामले पर चर्चा करते दिख रहे हैं। कुछ लोग यह सवाल उठा रहे हैं कि हमारे समाज को ऐसे बाबाओं की जरूरत क्या है? बड़ी तादाद में लोग बाबाओं के पास क्यों जाते हैं? महिलाओं के नजरिये से देखें तो सिर्फ भक्ति इसकी वजह है या उन्हें लगता है कि अपनी बात कहने के लिए और सिर्फ इसलिए कि कोई उन्हें सुन ले, वे बाबाओं के सत्संग में पहुंच जाती हैं? क्या सायकायट्रिस्ट या काउंसलर की कमी की वजह से भी बाबाओं के पंडाल गुलजार हैं? यहां पेश है एक ऐसी चर्चा का ब्योरा जिसमें कुछ इसी तरह के सवालों के जवाब तलाशे गए हैं:

#हैशटैग

कोई बात सुने तो शांत होता है मन

लोग बाबा के पास जाते हैं क्योंकि सायकायट्रिस्ट उपलब्ध नहीं। अगर ज्यादा सायकायट्रिस्ट मौजूद होंगे, सरकार इस क्षेत्र को प्रोत्साहन देगी तो कुछ लोग सायकायट्रिस्ट के पास जाना शुरू करेंगे। फिर देखा-देखी और लोग भी जाएंगे, फिर यह सामान्य बात हो जाएगी। सब जरूरत के हिसाब से ट्रॉई करेंगे और अगर फायदा होगा तो जाना जारी रखेंगे। लेकिन इस सबके लिए मनोचिकित्सक का सस्ता-सुलभ होना जरूरी है। पहले लोग डॉक्टर के पास भी नहीं जाते थे। लेकिन आज कौन नहीं जाता? वैसे कोई बाबा भी अपनी दुकान सजाने से पहले यह नहीं सोचता कि बहुत वक्त लगेगा। एक बाबा को भी राष्ट्रीय स्तर पर पहुंचने में और पूंजी बनाने में 10-15 साल लग जाते हैं। फिर सरकार और हम लोग ऐसा क्यों सोचें? आजकल के माहौल में रिश्तेदार, परिवार के सदस्य भी एक-दूसरे की सुनना नहीं चाहते, ऐसे में जब कोई सुनता है या सुनने की ऐक्टिंग ही करता है, उनसे बातें करता है, हंसाता है, रुलाता है, थोड़ी देर के लिए एक अलग माहौल देता है तो मन शांत हो जाता है। एक मकसद मिल जाता है। व्यक्ति थोड़े समय के लिए रिचार्ज हो जाता है। वहां बार-बार जाने लगता है। फिर धार्मिकता तो उसने बचपन से सीखी ही हुई है। हर वर्ग का अपना मनोविज्ञान है और बाबाओं के पास सबको ऑफर करने के लिए कुछ न कुछ है। ये अच्छे से जानते हैं, कौन क्या सुनना चाहता है। समस्या मनोवैज्ञानिक है जोकि सामाजिक-आर्थिक विषमताओं से पैदा हुई है। न इतने सायकायट्रिस्ट कभी होंगे और न उनके पास सबका इलाज होगा। हां, लेकिन कुछ सायकायट्रिस्ट तो होने ही चाहिए और सस्ते-सुलभ होने चाहिए। कम से कम सोशल काउंसलिंग जैसी चीजें तो हों, जहां जाकर प्राइवेट में आम व्यक्ति अपनी बात जाकर कह सके। कोई सुनने वाला हो, थोड़ी बहुत सलाह ही दे दे। सामुदायिक गतिविधियों को सरकार बढ़ावा दे, सस्ते क्लब वगैरह हों। कम से कम बच्चों के लिए जरूर हों, जहां वे कुछ क्रिएटिव, आर्टिस्टिक शौक विकसित कर सकें।

-अनिरुद्ध गुप्ता

कोई तो शांत करे जिज्ञासा

अगर ये लोग (बाबा) नहीं होंगे तो गांवों में मानसिक बीमारी की समस्या विकराल रूप ले लेगी। खासकर महिलाएं, जिनकी समस्या सुनने वाले उपलब्ध नहीं हैं। साथ ही ऐसे बच्चे, जिनके मन में बहुत जिज्ञासा है पर उनसे बात करने वाला कोई काबिल और जानकार शख्स नहीं मिलता। कुछ हद तक मानसिक राहत इन बाबाओं से मिल जाती है। ज्ञान-विज्ञान के परे, सही गलत के परे, पढ़े-लिखे और अनपढ़ से परे, ये जो बाबा होते हैं, वे भी हीलर हैं। यह बात अलग है कि सरकार को आम लोगों को ट्रेड और सर्टिफाइड हीलर उपलब्ध कराने चाहिए।

-आकाश रंजन

हालात बदल नहीं पाते तो परेशान

मनुष्य निजी तौर पर अपने जीवन की स्थितियां बदल पाने के काबिल नहीं है और व्यवस्था सदियों से उसके खिलाफ है। भौतिक जगत से नाउम्मीदी अभौतिक सुखों की ओर आकर्षित करती है। सब अपने में ही परेशान है।

-राम कुमार सविता

मानसिक तनाव बढ़ने की वजह

किसी की मानसिक दशा देखकर उस शख्स को सायकायट्रिस्ट के पास जाने के लिए नहीं कह सकते। लोग सायकायट्रिस्ट के नाम से बुरा मान जाते हैं। मानसिक तनाव की स्थिति इतनी गंभीर होते जाने की मुख्य वजह ही यह है।

-नीरू विर्क

निगेटिव धारणाएं हैं दिक्कत

सायकायट्रिस्ट को लेकर अब भी तमाम निगेटिव धारणाएं हैं। सबसे पहली तो यह कि शख्स शायद पागल हो गया है। फिर बाबा के पास जाने वाली हजारों की भीड़ है। उसमें भेड़ बनकर शामिल हुआ जा सकता है।

-प्रदीप कुमार

जरूरत है अवेयरनेस की

मैं खुद एक नर्सिंग ट्यूटर हूं। हम अवेयरनेस फैलाते हैं लेकिन लोग नहीं मानते और मानसिक बीमारी को भूत-बाधा का नाम देकर बाबाओं के पास जाकर छोते रहते हैं।

-मीनू पंडिता

बाबा ज्यादा यानी सिस्टम फेल

देश के सिस्टम को लोगों को जो राहत देनी थी वह उसने दी नहीं तो कहां जाएं। किसी देश में जितने ज्यादा बाबा हैं समझिए सिस्टम उतना ही फेल है।

-कनुप्रिया

भीड़ और बाबा किसके काम के?

यह अंधविश्वासी भीड़ और भीड़ को अपना भक्त बनाने वाले बाबा पूंजीवाद और सत्ता के लिए बड़े काम की चीज हैं।

-भारती कंवल

हर वक्त चाहिए एक भगवान

कई दिनों से सोच रही हूं कि क्या ईश्वर कभी अप्रासंगिक हो पाएगा? किसी ने लिखा था कि ईश्वर नहीं होगा तो हम अमिताभ बच्चन और रजनीकांत के मंदिर बना लेंगे। असल में इंसान को स्वतंत्रता की जरूरत ही नहीं है। उसे हर वक्त एक भगवान चाहिए।

-अमृता नीरव

महिलाओं के बंधन जिम्मेदार

बाबाओं की सबसे ज्यादा भक्त महिलाएं ही होती हैं। इसके पीछे हमारे सामाजिक बंधनों में जकड़ी महिलाओं का मनोविज्ञान काम करता है। घर में नौकरी की तरह काम, दोयम क्या अंतिम दर्जे का स्थान, वजह-बेवजह अपमान और सौ-सौ बंदिशों में घुट रही महिला के लिए बाबा की संगति वह स्पेस है जहां वे मुक्त और स्वायत्त अनुभव करती हैं। एक मर्द जिसके साथ मुक्त भाव से हंस-गा लेती है, लोक-लाज के डर से मुक्त होकर उन्मुक्त भाव से नाच लेती हैं। बाबा ही सही, एक मर्द है जो उन्हें सुंदर कहता है, अच्छी कहता है, उनकी बात सच्चा भाव से सुनता है और उन्हें रिजेक्ट करने या झिड़कने के बजाय प्रेम से अपनाता है। उन्हें प्रेम के बंधन में बंधने की जगह प्रेम में मुक्ति की राह दिखाता है। दुनियाभर के बाबाओं की फैन फॉलोइंग का यह एक कड़वा सच है। हमारी सामाजिक जकड़नों से उपजी विसंगतियों का सच।

-लक्ष्मी शर्मा

काव्य रंग

बारिश

मैं चुप कराता हूं हर शब उमडती बारिश को
मगर ये रोज गई बात छेड़ देती है

-गुलजार

❖ ❖ ❖

मैं कि कागज़ की एक कश्ती हूं
पहली बारिश ही आखिरी है मुझे

-तहज़ीब हाफ़ी

❖ ❖ ❖

ये दौलत भी ले लो ये शोहरत भी ले लो
मगर मुझको लौटा दो वो बचपन का सावन
वो कागज़ की कश्ती वो बारिश का पानी

-सुदर्शन फ़ाकिर

❖ ❖ ❖

बरसात आ गई तो दरकने लगी ज़मीन
सूखा मचा रही है ये बारिश तो देखिए

-दुष्यंत कुमार

❖ ❖ ❖

दफ्तर से मिल नहीं रही छुट्टी वर्ना मैं
बारिश की एक बूंद न बे-कार जाने दूं

-अजहर फ़राग

❖ ❖ ❖

जैसे खिली घनी धूप के बाद
अचानक होने लगती है तेज बारिश
वैसे ही कभी चले आना तुम
बिना बताए अचानक
दरवाजे पर खड़े होकर
फैला देना अपनी दोनों बाहें
मैं कभी आंखें मलकर
तो कभी चुटकी काटकर
खुद को भरोसा
दिलाने की कोशिश करूंगी
और जब हो जाएगा भरोसा
इस बात का
कि हाँ वह तुम्हीं हो
तो झूम उठूंगी ऐसे
जैसे बारिश में नहाते हुए
खुशी से नाच उठते हैं छोटे बच्चे।

-चित्रा पंवार

❖ ❖ ❖

हारमोनियम पर बजती हुई
सरगम की धुन होती है बारिश
और नींद
उस सरगम के समानांतर चलने वाला
मौखिक रियाज

-संजय राय

आर.एन.आई. नं. DELLBIL/2004/12327 अनधिकृत कृतियां/चित्रों अथवा सूचनाओं के पुनर्मुद्रण के लिए संपादक का लिखित अनुमति के बिना पुनर्मुद्रण अनिवार्य है। अनधिकृत व्यक्ति/संस्थान/एजेंट/कोरियर/संवाददाता/एजेंट अधिकृत नहीं हैं। संपादक द्वारा प्रकाशन प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया भवन, 1, रफी मार्ग, नई दिल्ली-110001 से प्रकाशित तथा प्रकाशन प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया भवन, संसद मार्ग, नई दिल्ली-110001 से मुद्रित। तथ्य एवं मत प्रकाशित समाचार लेखकों के मत्रान एवं संपादन हेतु पी.टी.आई. एवं ए.पी. के अनुरोध उपलब्धी। प्रकाशन विभाग दिल्ली मुख्यालय : 1 से 10 मंजिली इमारत, टेलिफोन नं. 23438000-04, फैक्स 23320363, टेलीग्राम भारतीय : उपग्रह/वीडियो केंद्र, मुंबई-400001। विभाग देश मुख्य : जेनेवा से संबंधित : नेपाली 5 व 6, टोकियो : नेपाली 5 व 6, न्यूयॉर्क संपादक* (हिन्दी) : राजेश विलास। *मुख्य प्रेस में प्रकाशित समाचार लेखकों के मत्रान एवं संपादन हेतु पी.टी.आई. एवं ए.पी. के अनुरोध उपलब्धी।

कानपुर के नवेन्दु मिश्रा ने ब्रिटेन के चुनाव में हासिल की शानदार जीत

भाषा। लखनऊ

ब्रिटेन के आम चुनाव में लेबर पार्टी के उम्मीदवार नवेन्दु मिश्रा की शानदार जीत के बाद उत्तर प्रदेश के कानपुर और गोरखपुर में जश्न का माहौल है। स्टॉकपोर्ट सीट से दूसरी बार सांसद बने मिश्रा (35) का जन्म 1989 में कानपुर में हुआ था। उनका ननिहाल गोरखपुर में है। अब लखनऊ में रह रहे मिश्रा के मामा और समाजसेवी एवं कारोबारी नीलेन्द्र पांडेय ने पीटीआई-भाषा को बताया कि गोरखपुर, लखनऊ और कानपुर में कुछ लोगों ने मिठाइयां बांटकर और पटाखे फोड़ कर उनकी जीत का जश्न मनाया। पांडेय ने बताया कि मिश्रा चार साल की उम्र में ही ब्रिटेन चले गए थे।उनके पिता इंडियन पेट्रोकेमिकल्स कॉरपोरेशन लिमिटेड में विपणन प्रबंधक थे और ब्रिटेन की एक कंपनी का कार्यभार संभालने के बाद वह ब्रिटेन चले गए। मिश्रा अपने भाई और बहन के साथ ब्रिटेन में ही पले-बढ़े हैं। लंदन में पढ़ाई पूरी करने के बाद मिश्रा राजनीति में आए और 2019 के चुनाव में वह स्टॉकपोर्ट सीट से हाउस ऑफ कॉमंस के लिए चुने गए थे। पांडेय ने बताया कि मिश्रा स्टॉकपोर्ट में मजदूर संघ आंदोलन के जरिए राजनीति में आए। पांडेय ने बताया कि अपने भांजे से उनका बहुत गहरा लगाव है और मिश्रा ने चुनाव जीतने के बाद फोन कर उनका आशीर्वाद लिया। उन्होंने कहा, नवेन्दु को भारत आना और यहां रहना बहुत अच्छा लगता है।

स्टॉक्पोर्ट सीट से दूसरी बार सांसद बने मिश्रा- नवेन्दु का जन्म 1989 में कानपुर में हुआ था उनका ननिहाल गोरखपुर में है

हमेशा उसकी यही इच्छा रहती है कि वह अपने देश के लिए कुछ कर सके। उन्होंने बताया कि मिश्रा साल-दो साल में एक बार भारत आते हैं। पांडेय ने अपने भांजे की तारीफ करते हुए कहा, आप उसकी लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगा सकते हैं कि ब्रिटेन में ज्यादातर सांसद हजार-दो हजार मतों के अंतर से चुनाव जीते हैं, लेकिन नवेन्दु ने करीब 16 हजार मतों के अंतर से चुनाव जीता है। मिश्रा को कुल 21,787 वोट मिले। उनके निकटतम प्रतिद्वंद्वी रिफॉर्म यूके उम्मीदवार लिन शॉफिल्ड को 6,517 मत मिले। मिश्रा ब्रिटेन जाने के करीब छह-सात साल बाद, पहली बार भारत लौटे थे और गोरखपुर में अपने ननिहाल के बच्चों संग पतंग उड़ाते और गली में क्रिकेट खेला करते थे।हाल में एक प्रतिनिधिमंडल के साथ मिश्रा भारत आए थे और गुजरात के मुख्यमंत्री भूपेंद्र पटेल से मुलकात की थी। प्रतिनिधिमंडल ने दिल्ली में विदेश मंत्री एस जयशंकर से भी मुलाकात की थी। राजनीतिक विशेषज्ञों ने दावा किया कि मिश्रा की जीत और भारत के साथ उनके जुड़ाव से दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंध और सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक संबंध मजबूत होंगे। पांडेए ने कहा कि मिश्रा ने अयोध्या में राम मंदिर जाने की भी योजना बनाई थी। गोरखपुर में पांडेय के सहयोगी रहे ईश्वर सिंह ने दावा किया, मिश्रा को राजनीति में जाने और समाज सेवा की प्रेरणा अपने मामा नीलेन्द्र पांडेय से ही मिली थी। कानपुर के आर्य नगर में मिश्रा के पैतृक घर पर भी स्थानीय लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी, जो उनके लगातार दूसरी बार चुनाव जीतने पर परिवार को बधाई देने के लिए एकत्र हुए थे। मिश्रा करीब दो साल पहले आर्य नगर स्थित अपने घर आए थे पांडेय ने कहा, हमने मिश्रा को शीघ्र यहां आने के लिए आमंत्रित किया है और उनके आगमन के बाद लखनऊ में स्वागत समारोह आयोजित किया जाएगा।

प्रदेश में पिछले 24 घंटे में बारिश से जुड़ी घटनाओं में 13 लोगों की मौत

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में पिछले 24 घंटों में बारिश से जुड़ी घटनाओं में 13 लोगों की मौत हो गई। राहत विभाग के अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। राहत आयुक्त की ओर से जारी एक बयान में कहा गया कि पिछले 24 घंटों में राज्य में बारिश से जुड़ी घटनाओं में 13 लोगों की मौत हो गई। बयान के अनुसार, शुक्रवार शाम साढ़े छह बजे से शनिवार शाम साढ़े छह बजे तक फतेहपुर में आकाशीय बिजली गिरने से दो लोगों की मौत हो गई, जबकि एक अन्य की डूबने से मौत हो गई। बयान के मुताबिक रायबरेली जिले में आकाशीय बिजली गिरने से एक व्यक्ति की मौत हो गई, जबकि एक अन्य की बारिश से जुड़ी घटना में जान चली गई। बयान में कहा गया कि बुलंदशहर, कन्नौज, मैनपुरी, कौशांबी, फिरोजाबाद, प्रतापगढ़, उन्नाव और मैनपुरी जिलों में भी एक-एक व्यक्ति की मौत की खबर है। उत्तर प्रदेश में औसतन 18.3 मिलीमीटर बारिश हुई। राहत विभाग के अनुसार, पिछले 24 घंटों में 75 जिलों में से 45 में अधिक बारिश दर्ज की गई। सभी जिलों में सबसे अधिक 65.5 मिमी बारिश श्रावस्ती जिले में दर्ज की गई। राहत विभाग ने नेपाल की सीमा से लगे जिलों में स्थानीय प्रशासन को भी अलर्ट कर दिया है। राज्य के राहत आयुक्त नवीन कुमार ने कहा,"नेपाल में हाल में हुई भारी बारिश को देखते हुए सभी सीमावर्ती जिलों के अधिकारियों को 24 घंटे निगरानी के लिए सतर्क किया गया है। जरूरत के हिसाब से बाढ़ पीएसीएसडीआरएफपानडीआरएफ की टीम तैनात की गई हैं और सभी यूनिट मोर्चा संभालने के लिए तैयार हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार कांवड़ियों पर फिर हेलीकॉप्टर से बरसाएगी फूल

भाषा। मेरठ

उत्तर प्रदेश सरकार आगामी कांवड़ यात्रा पर हेलीकॉप्टर से निगरानी रखेगी और कांवड़ियों पर फूल भी बरसाएगी। अधिकारियों ने शनिवार को यह जानकारी दी। यहां जारी एक विज्ञप्ति के अनुसार राज्य के मुख्य सचिव मनोज कुमार सिंह और पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) प्रशांत कुमार ने मेरठ, सहारनपुर, अलीगढ़, मुरादाबाद मंडलों के वरिष्ठ पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों तथा उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा और राजस्थान के अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। यह बैठक मेरठ मंडलायुक्त सभागार में हुई। कांवड़ यात्रा 22 जुलाई के बाद शुरू होने की उम्मीद है। बयान के अनुसार समीक्षा बैठक में मुख्य सचिव ने बताया कि पूरी यात्रा पर हेलीकॉप्टर से निगरानी रखी जाएगी और पिछले वर्षों की तरह श्रद्धालुओं पर फूल भी बरसाए जाएंगे। सिंह ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि कांवड़ यात्रा के दौरान कांवड़ियों के प्रति अच्छा व्यवहार बनाए रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि कांवड़ियों की सुरक्षा सुनिश्चित करना

और उन्हें सुविधाएं मुहैया कराना प्रशासन की जिम्मेदारी है। उन्होंने कहा कि कांवड़ यात्रा को सकुशल संपन्न कराना सरकार की प्राथमिकता है। उन्होंने कहा कि कांवड़ शिविरों और कांवड़ मार्ग की साफ-सफाई पर विशेष ध्यान दिया जाए और यात्रा को पूरी तरह प्लास्टिक मुक्त बनाया जाए। मुख्य सचिव ने लोक निर्माण विभाग, एनएचएआई के अधिकारियों को कांवड़ मार्ग पर पड़ने वाली सड़कों को गड्ढा मुक्त करने के निर्देश दिए। उन्होंने विद्युत विभाग के संबंधित अधिकारियों को मार्ग पर बिजली के तारों और खंभों को दुरुस्त करने के निर्देश दिए, ताकि कोई अप्रिय घटना न घटे। इस दौरे में मुख्य सचिव और डीजीपी ने बाबा औघड़नाथ मंदिर पहुंचकर कांवड़ से जुड़ी सुरक्षा व्यवस्था का जायजा लिया। डीजीपी प्रशांत कुमार ने अधिकारियों से कहा कि स्थानीय लोगों को सूचित कर यात्रा के लिए मार्ग परिवर्तित किया जाए। उन्होंने उनसे कहा कि शिविर में खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता की जांच की व्यवस्था की जाए, ताकि खाद्य विषाक्तता जैसी घटनाएं न हों। उन्होंने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिए कि ध्वनि सीमा के अंदर ही संगीत चलाया जाए, आपराधिक तत्वों पर कड़ी नजर रखी जाए और कोई भी मामला संज्ञान में आने पर तत्काल कार्वाई की जाए।

स्वास्थ्य विभाग की अनदेखी से नगर में 200 से अधिक गैर पंजीकृत सेंटर: दिलीप गहरवार

विभाग ने पिछले तीन वर्षो से नही की कोई कार्यवाही सबसे खस्ता हाल है ,सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मड़िहान

मिर्जापुर। स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही से जिले में गैर पंजीकृत सेन्टरों की भरमार हो गई है। यह जानकारी मीडिया से बात करते हुए आम आदमी पार्टी के दिलीप सिंह गहरवार ने दी।दिलीप सिंह गहरवार ने बताया कि जिले के नगर में ही केवल 200 से अधिक गैर पंजीकृत सेटर संचालित हो रहे है। इसमें न के बराबर ही सेटर सीएमओ आफिस द्वारा पंजीकृत किया गया है। जिले में अनदेखी करने वाले पैथालांजी सेंटर एवं कलेक्शन सेटर का कारोबार तेजी से फस्ट फूस रहा है। इसके साथ ही गांवो में कितने की संख्या में संचालित हो रहा है इसकी भी जानकारी विभाग से मिलने के बाद सभी के सामने उजागर करने का कार्य किया जायेगा। यह सब पैथालाजी सेन्टर कही एक कमरे में तो कही एक सेटर में चल रहे है। अप्रशिक्षित लोगों के हाथों में सेटर की कमान है। इससे मरीजों को सही रिपोर्ट नही मिल पा रहा है।उन्होने बताया कि वर्तमान समय में एक मंडलीय चिकित्सालयए 19 सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रए 56 प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों के अलावा 326 सबसेन्टरों का संचालन किया जा रहा है। सभी सरकारी केन्द्रों पर खून समेत तमाम जांच की सुविधा सरकार द्वारा निशुल्क कराये जाने की व्यवस्था है। लेकिन जिलेके तमाम केन्द्रों पर विभाग की अनदेखी के कारण तमाम खामियों के चलते जांच नही हो पा रही है। इससे मरीजों का निजी चिकित्सालयों की ओर जाना पड़ रहा है। जहां प्रदेश व केन्द्र की सरकारी मरीजों को जमीनी स्तर तक उपचार देने के लिए तरह,तरह के उपचार कर रही है वही विभाग के उच्चाधिकारियों की लापरवाही के चलते सुविधा से मरीज वंचित हो जा रहे है और महगे दवाईयो व जांच के लिए मजबूर है। इस समय सबसे खस्ता हाल में सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र मड़िहान का है जहां पर सीएमओ द्वारा बनाये गये प्रभारी अपर मुख्य चिकित्साधिकारी कभी झांकना तक उचित नही समझा। निजी सेन्टरो पर इस समय 450.500 रूपये लिये जा रहे है। इसमें केन्द्रो पर तैनात डॉक्टरों का भी कमीशन होता है। इसी रिपोर्ट के आधार पर मरीजों की दवा दी जा रही है। नगर से लेकर ग्रामीण इलाको मे यह धड़ल्ले से संचालित हो रहा है। जले में बिसुन्दरपुरए रमईपट्टीए मिशनकमाउण्डए तरकापुर रोडए तहसील रोडए मण्डलीय चिकित्सालय रोडए रैदानी कालोनीए स्टेशन रोडए बिन्धाचल रोडए मड़िहान सामुदायिक स्वास्थ्य के अगल बगल 40 से अधिक की संख्याए हलिया मार्ग रतेह चौराहा इसके अलावा तमाम बजारोमें भी गैर कानूनी तरीके से सेन्टर संचालित हो रहा है। इसका सबसे बड़ा कारण विभाग के द्वारा पिछले तीन वर्षो से कार्यवाही नही किया गया।

मुजफ्फरनगर दंगा मामले में अदालत में पेश हुए मंत्री और पूर्व विधायक, अगली सुनवाई नौ जुलाई को

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर में 2013 में हुए सांप्रदायिक दंगे में भड़काऊ भाषण देने के सिलसिले में उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री कपिलदेव अग्रवाल और पूर्व केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान एवं अन्य आरोपी एक स्थानीय सांसद-विधायक अदालत (एमपी-एमएलए कोर्ट) में शनिवार को पेश हुए। अदालत ने मामले की अगली सुनवाई के लिए नौ जुलाई की तारीख तय की है। अभियोजन अधिकारी नीरज सिंह ने आज यहां पीटीआई-भाषा को बताया कि 2013 के मुजफ्फरनगर दंगे के आरोपी उत्तर प्रदेश सरकार के मंत्री कपिल देव अग्रवाल, पूर्व केंद्रीय मंत्री संजीव बालियान, पूर्व भाजपा विधायक उमेश मलिक और महंत नरसिंहानंद सरस्वती एवं अन्य यहां विशेष एमपीएमएलए अदालत में पेश हुए। सिंह ने बताया कि विशेष एमपीएमएलए अदालत के न्यायाधीश देवेंद्र सिंह फौजदार ने इस मामले की आगे की सुनवाई के लिए नौ जुलाई की तारीख तय की है। उन्होंने बताया कि 21 लोगों पर अगस्त 2013 में नफरत भरे भाषण देने का आरोप है। अभियोजन पक्ष का कहना है कि आरोपियों ने अगस्त 2013 में नगला मंडौर पंचायत की बैठक में भाग लिया और अपने भाषणों के माध्यम से हिंसा भड़काई। अगस्त और सितंबर 2013 में मुजफ्फरनगर और आसपास के इलाकों में सांप्रदायिक झड़पों में 60 से अधिक लोग मारे गए थे और 40,000 से अधिक लोग विस्थापित हुए थे।

हत्या के आरोपी युवक का शव मिला, परिजनों ने हत्या का अंदेशा जताया

अमेठी। अमेठी जिले के अमेठी थाना क्षेत्र में एक गांव के पास से पुलिस ने शनिवार को एक युवक का शव बरामद किया जो एक ग्राम प्रधान के भाई की हत्या में आरोपी था। पुलिस ने यह जानकारी दी। युवक के परिजनों ने हत्या का अंदेशा जताया है। अमेठी के पुलिस अधीक्षक (एसपी) अनुप कुमार सिंह ने बताया कि महमूदपुर निवासी मोनू पासी (35) का शव आज शाम बड़ा रामनाथपुर गांव के निकट मिला और शव के पास सल्फास कीटनाशक दवा का पैक भी था।

श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर संगोष्ठी आयोजित

अंबेडकर नगर । डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर भाजपा जिला कार्यालय अटल भवन में संगोष्ठी आयोजित किया गया। संगोष्ठी को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि भाजपा प्रदेश उपाध्यक्षएविधान परिषद सदस्य विजय बहादुर पाठक ने कहा कि पण्डित श्यामा प्रसाद मुखर्जी का सपना था कि भारत में एक विधान एक निशान एक संविधान चलेए जबकि कश्मीर में दो विधान दो निशान और अलग से संविधान चल रहा था उन्होंने इसका विरोध करते हुए कश्मीर की जेल में अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। मुखर्जी जी की सपने को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कश्मीर से धारा 370 एवं 35 ए हटाकर किया। आज कश्मीर भारत के साथ विकास के पायदान पर आगे बढ़ रहा है तथा दलितों एवं पिछड़ों को आरक्षण का लाभ मिल रहा है। जम्मू कश्मीर में कभी आरक्षण का लाभ मिलता ही नहीं था।ऐसे देशभक्त मुखर्जी जी के बलिदान को आज पूरा देश याद कर रहा है।मुखर्जी जी को श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि कांग्रेस ने देश पर आपात लागू कर लोगों का दमन किया गया था।संविधान की मूल आत्मा को कुचला गया आज वे संविधान बचाने की बात कर रहे हैं जो एक दिखावा से अधिक कुछ नहीं है।

डीएम ने बैनामेदारों को किया सम्मानित

अंबेडकर नगर। जिलाधिकारी अविनाश सिंह द्वारा कलेक्ट्रेट कार्यालय में उपस्थित सभी बैनामे दारी को माला पहनाकर तथा मिठाई खिलाकर सम्मानित किया गया। तहसीलदार अकबरपुर द्वारा अवगत कराया गया कि सत्य नारायण पुत्र मोती लाल द्वारा 0ष्7ष्30 हेक्टेयर भूमि का बैनामा यूपीडा के पक्ष मे किया गयाए इन्हे 01 करोड़ 01लाख 78 हज़ार 525 रूपये का भुगतान किया गया। प्रवीण कुमार पुत्र राम बरनए प्रीतम पुत्र राम बरनए पंकज पुत्र राम बरन द्वारा यूपीडा के पक्ष मे 0ष्7ष्30 हेक्टेयर का बैनामा किया गयाए इन्हे संयुक्त रूप से 99 लाख 01 हजार 758ष्00 रुपए का भुगतान किया गया।इसके अतिरिक्त राम सागर पुत्र मोती लाल द्वारा 0ष्7ष्30 हेक्टेयर का बैनामा किया गयाए इन्हे 1 करोड़ 01 लाख 89 हजार 846 रूपये का मुवावजा मिला। इन सभी किसानों द्वारा अंबेडकर नगर इंडस्ट्रियल कॉरिडोर में दी गई भूमि के लिए तथा उनके द्वारा जनपद अंबेडकर नगर के औद्योगिक विकास के लिए दिए गए सहयोग के प्रति जिलाधिकारी द्वारा सभी किसानों का आभार व्यक्त किया गया। इस दौरान मौके पर अपर जिलाधिकारी डॉष्सदानंद गुप्ताए उप जिलाधिकारी अकबरपुर पवन कुमार जायसवालए एआईजी स्टाप अविनाश पाण्डेएतहसीलदार अकबरपुर बलबीर सिहए तथा किसान मौके पर उपस्थित रहे।

मुखर्जी के जीवन से लेनी चाहिए प्रेरणा: मनोज

जनसंघ के संस्थापक डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी कें जयन्ती पर संगोष्ठी व पौध वितरण का हुआ आयोजन

सोनभद्र। अखण्ड भारत के प्रणेता जनसंघ के संस्थापक डा0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के जन्म जयन्ती पर संगोष्ठी व पौधरोपण, पौध वितरण का आयोजन भाजपा जिला कार्यालय पर किया गया। जिसमे बतौर मुख्यअतिथि मिर्जापुर के पूर्व जिलाध्यक्ष मनोज जायसवाल, विशिष्ट अतिथि राज्यसभा सांसद रामशकल, सदर विधायक भूपेश चौबे उपस्थित रहे। संगोष्ठी का

शुभारंम्भ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के चित्र पर माल्यार्पण व पुष्प अर्पित कर किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष नन्दलाल व संचालन जिला महामंत्री रामसुन्दर निषाद ने किया। इस अवसर पर बतौर मुख्यअतिथि मनोज जायसवाल ने कहा हम सभी को इस अवसर पर बतौर मुख्यअतिथि मनोज जायसवाल ने कहा हम सभी को डा0 मुखर्जी के जीवन तथा उनके कार्यो से प्रेरणा लेनी चाहिए और यह संकल्प लेना चाहिए कि स्वहित से बड़ा देशहित होता है। उनके दिये हुए ध्येय को स्थापित करने के लिए निरन्तर परिश्रम करें, यही डा0 मुखर्जी को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। इस मौके पर राज्यसभा सांसद रामशकल ने कहा कि जब 1925 मे आरएसएस कि स्थापना हुयी उसके बाद तत्कालीन संघ प्रमुख ने सोचा कि राजनीतिक क्षेत्र मे भी अपने लोगो को काम करने की आवश्यकता है तत्पश्चात् डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी व अन्य चार सहयोगियों के साथ एक अलग राजनैतिक संगठन जनसंघ के नाम से स्थापित किया गया जो आज ऐसे मनीषियों के कारण ही एक बडा वट वृक्ष भाजपा के रुप मे बनकर काम कर रहा है। इस मौके पर सदर विधायक भूपेश चौबे ने कहा कि डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी के पदचिन्हो पर चलते हुए भाजपा की केन्द्र सरकार व प्रदेश सरकार देश के हित मे लगातार काम कर रही है। इस मौके पर भाजपा जिलाध्यक्ष आये हुए अतिथियों व कार्यकर्ताओं का आभार व धन्यवाद ज्ञापित किया। इस मौके पर पूर्व जिलाध्यक्ष धर्मवीर तिवारी, अजीत चौबे, सदर प्रमुख अजीत रावत ओमप्रकाश यादव सहित आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नाबालिग बहन की हत्या करने के आरोपी दो भाई हुए गिरफ्तार

बलिया। बलिया जिले के बांसडीह थानाक्षेत्र में पुलिस ने अपनी ही नाबालिग बहन की हत्या करने के आरोपी दो सगे भाइयों को शनिवार को गिरफ्तार कर लिया और तीसरे की तलाश कर रही है। पुलिस के एक अधिकारी ने यह जानकारी दी। पुलिस के अनुसार इस साल 19 जून को बांसडीह थाना क्षेत्र में एक मंदिर के पास से 17 वर्षीय एक नाबालिग लड़की का शव बरामद किया गया था। पोस्टमार्टम जांच में पुष्टि हुई कि लड़की की गर्दन में साड़ी कसकर हत्या की गई थी। उसका चेहरा भी तेजाब से आंशिक रूप से जला हुआ था। बलिया के पुलिस अधीक्षक (एसपी) देव रंजन वर्मा ने बताया,"जांच के दौरान पाया गया कि नाबालिग लड़की अपने तीन भाइयों की इच्छा के विरुद्ध किसी लड़के से फोन पर बात करती थी। इसी कारण विकाऊ जोगिंदर और रविंदर राजभर नामक उसके तीनों भाइयों ने उसकी हत्या कर दी और शव को फेंक दिया"। पुलिस के अनुसार भाइयों ने पूछताछ में बताया कि उन्होंने अपनी नाबालिग बहन के चेहरे को बैटरी का तेजाब फेंककर खराब किया ताकि उसकी पहचान करना मुश्किल हो।

गोंडा में पत्नी व दो बच्चों की हत्या के दोषी पति को उम्रकैद

गोंडा। गोंडा जिले की एक अदालत ने पत्नी एवं दो बच्चों की हत्या करने के जुर्म में एक युवक को आजीवन कारावास की सजा सुनाई और उसपर 27 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया। सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता (फौजदारी) अभिनव चतुर्वेदी ने शनिवार को बताया कि अपर सत्र न्यायाधीश (त्वरित अदालत नवीन) नम्रता अग्रवाल ने दोनों पक्षों की सुनने के बाद आरोपी पति इलियास को हत्या का दोषी मानते हुए उम्र कैद की सजा सुनाई तथा उसपर 27 हजार रुपए का जुर्माना भी लगाया।

दैनिक जागरण
सत्य मानवीय अस्तित्व का आधार है

अनुचित मांग

मेडिकल कालेजों में प्रवेश की अखिल भारतीय परीक्षा यानी नीट की काउंसलिंग की तैयारी के बीच यह जो मांग हो रही है कि इस परीक्षा को रद कर उसे दोबारा कराया जाए, उस पर तब तक ध्यान नहीं दिया जाना चाहिए, जब तक इसके पुष्ट प्रमाण सामने न आ जाएं कि इस परीक्षा की शुचिता पूरे देश में प्रभावित हुई। निःसंदेह पटना और गोधरा में इस परीक्षा में सेंध लगने की आशंका है, लेकिन अभी यह नहीं सामने आया कि दो केंद्रों में परीक्षा के आयोजन में गड़बड़ी से पूरे देश में नीट प्रभावित हुई। अच्छा यह होगा कि नीट में सेंध लगने के मामले की जांच कर रही सीबीआइ अपनी छानबीन तेज करे और अपने निष्कर्ष से सुप्रीम कोर्ट को अवगत कराए। नीट को रद करने पर जोर देना विपक्षी दलों के लिए राजनीतिक दृष्टि से सुविधाजनक हो सकता है, लेकिन उन्हें छात्रों की सुविधा और उनके हितों पर भी ध्यान देना चाहिए। इस परीक्षा में करीब 24 लाख छात्र बैठे थे। यदि यह परीक्षा रद होती है तो इन छात्रों को नए सिरे से परीक्षा देने में विवश होना पड़ेगा। आखिर जब अभी ऐसा कोई प्रमाण सामने नहीं आया कि इस परीक्षा में जो गड़बड़ी हुई, उसके कारण पूरे देश में उसकी विश्वसनीयता भंग हुई, तब फिर इस पर जोर देने का क्या औचित्य कि उसे रद किया जाए? वैसे भी यह फैसला सुप्रीम कोर्ट को करना है।

आखिर नीट के मामले में विपक्षी दल सुप्रीम कोर्ट के हिस्से का काम खुद क्यों करना चाहते हैं? यह ध्यान रहे कि अभी सुप्रीम कोर्ट ऐसे किसी नतीजे पर नहीं पहुंचा है कि नीट को रद कर उसे फिर से कराने की आवश्यकता है और इसी कारण उसने काउंसलिंग रद करने की मांग ठुकरा दी है। नीट के राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावित होने के प्रमाण मिले बिना उसे रद करना लाखों छात्रों के समय और संसाधन की बर्बादी करना है। यह चिंताजनक है कि नीट को लेकर कुछ राजनीतिक दल यह मांग लेकर भी सामने आ गए हैं कि मेडिकल कालेजों में प्रवेश के लिए राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली इस परीक्षा की पूरी प्रक्रिया को ही समाप्त कर दिया जाए। इस तरह की मांग तमिलनाडु सरकार की ओर से लंबे समय से की जाती रही है। अब यह मांग बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने भी कर दी है। यह समस्या को बढ़ाने और मेडिकल की पढ़ाई के आकांक्षी छात्रों की परेशानी बढ़ाने वाली अनुचित मांग है। इसकी सख्त आवश्यकता तो है कि नीट का आयोजन साफ-सुथरे ढंग से किया जाना सुनिश्चित किया जाए, लेकिन ऐसी कोई मांग करने के साथ इस पर भी जोर देना संकीर्ण राजनीति के अलावा और कुछ नहीं कि नीट के नाम से बनाई गई नई व्यवस्था को खत्म कर उस पुरानी व्यवस्था में लौट जाया जाए, जिसमें राज्य सरकारें और कुछ मेडिकल कालेज मनमानी करते थे।

पुलिस की नाकामी

पंजाब में जिस तरह से असामाजिक तत्वों के हौसले बुलंद हो रहे हैं उससे पुलिस की कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े होना स्वाभाविक है। लुधियाना में सरेआम शिवसेना नेता पर पंजाब पुलिस के गनमैन की मौजूदगी में निहंगों द्वारा हमला करने का मामला अत्यंत गंभीर है। यह भी हैरानीजनक है कि निहंगों ने गनमैन की पिस्तौल छीन ली। सवाल यह है कि ऐसे गनमैन के साथ रहने से व्यक्ति कितना सुरक्षित है? पुलिस की ओर से सुरक्षा उपलब्ध करवाने का ऐसी स्थिति में कोई मतलब नहीं रह जाता है। पूरे मामले में एक बात और स्पष्ट हो जाती है कि अपराधियों के मन से पुलिस का भय खत्म होता जा रहा है। यह राज्य के लिए कतई शुभ संकेत नहीं है। कभी नशीले पदार्थों की तस्करी करने वाले पुलिस टीम पर हमला कर देते हैं तो कभी अवैध खनन करने वाले। कुछ ही दिन पहले मारपीट के मामले में आरोपित को गिरफ्तार करने गई पुलिस टीम पर पथराव एवं फायरिंग की घटना हुई। एक एसआइ सहित हेड कांस्टेबल घायल हो गए। इस तरह के मामले जब सामने आते हैं तो लोगों का पुलिस पर से विश्वास कम होने लगता है। जहां तक लुधियाना की घटना है तो सरकार को इसे गंभीरता से लेना होगा। इस तरह की घटनाओं से राज्य का माहौल खराब होने की आशंका बनी रहती है। कुछ असामाजिक तत्व माहौल बिगाड़ने की साजिश करते रहते हैं। पुलिस को समय रहते सख्त कार्रवाई करनी होगी। कई बार पुलिस की लापरवाही की भारी कीमत चुकानी पड़ती है। कानून व्यवस्था राज्य में हर हाल में बनी रहनी चाहिए। इसके लिए सरकार व पुलिस को इच्छाशक्ति दिखाने की आवश्यकता है।

> लुधियाना में शिवसेना नेता पर पंजाब पुलिस की ओर से उपलब्ध कराए गए गनमैन की मौजूदगी में निहंगों द्वारा हमला करने का मामला अत्यंत गंभीर है

हाथरस हादसे के सबक

संजय गुप्त

देश में यदि स्वयं को संत कहने वाला कोई व्यक्ति भारी भीड़ जुटाने में समर्थ हो जाता है तो नेतागण वोट बैंक के लालच में उसे समर्थन-संरक्षण देने लगते हैं

आशुतोष त्रिपाठी

एक बार फिर एक धार्मिक आयोजन में भगदड़ मचने से अनेक लोग मारे गए। इस बार भगदड़ हाथरस में एक धार्मिक समागम में हुई, जहां खुद को साकार विश्व हरि कहने वाले कथावाचक लोगों को प्रवचन दे रहे थे। प्रवचन समाप्त होने के बाद अव्यवस्था के चलते जो भगदड़ मची, उसमें 121 लोग मारे गए। इनमें से अधिकांश महिलाएं और बच्चे थे। अपने देश में यह कोई पहली बार नहीं है, जब किसी धार्मिक अथवा सामाजिक-सांस्कृतिक आयोजन में भगदड़ मचने से लोगों की जान गई हो। इस तरह के हादसे दुनिया के दूसरे देशों में भी होते रहते हैं, लेकिन ऐसा लगता है कि अपने देश में ऐसे हादसे कुछ अधिक ही हो रहे हैं। धार्मिक-सामाजिक आयोजनों में अव्यवस्था फैलने से हादसे तब होते हैं, जब आयोजकों द्वारा न तो भीड़ का अनुमान लगाया जाता है और न ही प्रशासन की ओर से उसकी सुरक्षा के लिए पर्याप्त उपाय किए जाते हैं। इस कारण भीड़ की धक्कामुक्की के चलते भगदड़ मच जाती है और लोग एक-दूसरे के पैरों तले कुचलकर मारे जाते हैं। हाथरस में ऐसा ही हुआ। इस तरह के हादसे एक लंबे समय से होते चले आ रहे हैं, लेकिन उनकी रोकथाम के लिए ठोस उपाय नहीं किए जा रहे हैं।

धार्मिक आयोजनों में बड़ी आसानी से भीड़ एकत्रित हो जाती है। हालांकि धार्मिक कार्यक्रम आयोजित करने वाले और साथ ही कथावाचक अथवा संत-महात्मा उनमें अच्छा-खासा धन जुटाने में सफल रहते हैं, लेकिन वे श्रद्धालुओं की सुरक्षा के लिए ठोस प्रबंध नहीं करते। हाथरस में साकार विश्व हरि के धार्मिक समागम में अनुमान से कहीं अधिक भीड़ जुटी। इस आयोजन की अनुमति देने वाले अधिकारियों ने भी इसकी चिंता नहीं की कि जरूरत से ज्यादा बड़ी भीड़ तो नहीं इकट्ठी हो रही है? न तो आयोजकों ने यह देखा कि भारी भीड़ की निकासी के पर्याप्त उपाय हैं या नहीं, न ही पुलिस-प्रशासन ने। माना जा रहा है कि इस कार्यक्रम में भगदड़ इसलिए मची, क्योंकि बड़ी संख्या में एकत्रित श्रद्धालु साकार विश्व हरि के दर्शन के लिए उनके पास जाने के लिए धक्कामुक्की करने लगे। आयोजकों ने यह समझने से इन्कार किया कि यह धक्कामुक्की भगदड़ में तब्दील हो सकती है। अंततः ऐसा ही हुआ। इससे भी खराब बात यह रही कि भगदड़ मचने पर उसे नियंत्रित करने के कोई कदम नहीं उठाए गए।

साकार विश्व हरि खुद पुलिसकर्मी रहे हैं। इस नाते उन्हें इसकी जानकारी होनी चाहिए थी कि भीड़ के अनियंत्रित होने पर क्या स्थिति बनेगी, लेकिन उन्होंने भी इसकी परवाह नहीं की। आश्चर्य नहीं कि इसका कारण यह रहा हो कि खुद को संत-महात्मा कहने वाले साकार विश्व हरि जैसे लोग अपने भक्तों का उपयोग स्वयं के महिमामंडन करने और धन एकत्रित करने में करते हैं। ऐसे संत-महात्माओं का अपने अनुयायियों के आत्मिक उत्थान से कोई लेना-देना नहीं होता। आम तौर पर वे उन्हें झूठी दिलासा देते हैं और अंधविश्वासी बनाते हैं। वे उन्हें संयम और अनुशासन का पाठ भी नहीं पढ़ाते। अपने देश में संतों के प्रति एक आकर्षण और आदर रहता है। तमाम कथावाचक बहुत जल्द खुद को संत में तब्दील कर लेते हैं और कुछ खुद की पूजा कराने लगते हैं। कुछ तो स्वयं को ईश्वरीय या अलौकिक शक्तियों से लैस करार देते हैं। निर्धन और अशिक्षित लोग उनकी बातों में आ जाते हैं। धीरे-धीरे उनकी ख्याति बढ़ती जाती है और इसी के साथ उनके अनुयायी भी बढ़ते चले जाते हैं। साकार विश्व हरि के अनुयायियों की भी अच्छी-खासी संख्या है। हाथरस में उनके आयोजन में कुछ अनुयायी दूसरे राज्यों से भी आए थे। अपने देश में साकार हरि जैसे कथावाचकों अथवा संतों की कमी नहीं है। कोई भी कथावाचक धर्म-कर्म, ईश्वर आदि की अपनी तरह से व्याख्या करके लोगों को आकर्षित करने और अंततः उन्हें अपना अनुयायी बनाने में सफल हो जाता है। ऐसे अनुयायी आसानी से अंधविश्वास से भी ग्रस्त हो जाते हैं और कथावाचक या संत के प्रति उनकी आस्था इतनी अधिक बढ़ जाती है कि वे सही-गलत का भेद करना छोड़ देते हैं और तार्किकता से दूर हो जाते हैं।

साकार विश्व हरि जैसे कथावाचक किस तरह कम पढ़े-लिखे अशिक्षित और गरीब लोगों को सम्मोहित करने में सफल हो जाते हैं, इसका पता इससे भी चलता है कि पढ़े-लिखे लोग मुश्किल से ही उनके अनुयायी बनते हैं। यदि कभी वे बनते भी हैं तो भीड़ भरे आयोजनों में जाने से बचते हैं। चूंकि अनपढ़-अशिक्षित लोग इस धारणा से अधिक ग्रस्त होते हैं कि उनके जीवन में जो समस्याएं हैं, उनसे छुटकारा किसी संत-महात्मा के आशीर्वाद या सान्निध्य अथवा उसके उपदेश से मिल सकता है, इसलिए वे वैज्ञानिक चेतना का परिचय नहीं देते। धार्मिक आयोजनों में भारी भीड़ जुटने अथवा कथा-प्रवचन आदि के कार्यक्रम सुनने में कोई बुराई नहीं है, लेकिन यह देखा ही जाना चाहिए कि इस तरह के आयोजनों में अव्यवस्था किसी दुर्घटना को निमंत्रण न देने पाए।

अपने देश में एक समस्या यह भी है कि यदि कोई कथावाचक अथवा स्वयं को संत-महात्मा कहने वाला व्यक्ति भारी भीड़ जुटाने में समर्थ हो जाता है तो नेतागण वोट बैंक बनाने के लालच में उसे समर्थन और संरक्षण देने लगते हैं। यह समर्थन और संरक्षण ऐसे लोगों के साम्राज्य को बढ़ाने का काम करता है। इस पर आश्चर्य नहीं कि साकार विश्व हरि के अनेक आश्रम हैं और उनके कई नेताओं से भी संबंध-संपर्क हैं। इसकी भी अनदेखी नहीं की जा सकती कि अभी तक उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है और मायावती को छोड़कर कोई भी नेता यह नहीं कह पा रहा है कि लोगों को अंधविश्वास और पाखंड से बचने की जरूरत है। उलटे समाजवादी पार्टी के सांसद रामगोपाल यादव यह कहते हुए नजर आए कि इस तरह के हादसे होते ही रहते हैं। नेताओं का यह रवैया जाने-अनजाने सम्राम में अंधविश्वास को बढ़ावा है और नकली-पाखंडी संतों को बढ़ावा देता है। यह ठीक है कि धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक आयोजनों में लोगों को जाने से रोका नहीं जा सकता, लेकिन कम से कम इतना तो होना ही चाहिए कि इस तरह के आयोजनों में सुरक्षा के ठोस उपाय किए जाएं। भीड़ को नियंत्रित करने के उपाय आयोजकों को भी करने चाहिए और पुलिस-प्रशासन को भी। इसके साथ ही आम जनता को भी यह समझना होगा कि भीड़ भरे स्थलों में संयम और अनुशासन का परिचय देना आवश्यक है।

response@jagran.com

राज की तरह लीक होते प्रश्नपत्र

हास्य-व्यंग्य

रोहित कौशिक

इन दिनों परीक्षाओं के प्रश्नपत्र ऐसे लीक हो रहे हैं, जैसे टूटे पाइप से थोड़ा-थोड़ा पानी लीक होता रहता है

जैसे कोई जुगाड़ लगाकर टूटे हुए पाइप या टंकी से लीक होते पानी को किसी तरह रोकने की कोशिश की जाती है, उसी तरह परीक्षाओं के पेपरलीक होने की घटनाओं को रोकने की कोशिश की जाती है। नतीजा ढाक के तीन पात रहता है। एक तरफ पानी लीक होता रहता है तो दूसरी तरफ पेपर भी लीक होते रहते हैं। अब तो ऐसी घटनाएं आम हो गई हैं। कभी-कभी यह लगता है कि सबने यह मान लिया है कि शायद यही इस समय की नियति है। जिस तरह पाइप से थोड़ा-थोड़ा पानी लीक होने को बहुत बड़ी घटना नहीं माना जाता, उसी तरह का रवैया पेपर लीक होने की घटनाओं को लेकर भी दिखता है। इसीलिए अब तक पच्चासों पेपर लीक हो चुके हैं और इसी कारण पेपरलीक के मामलों से तब तक इन्कार किया जाता रहता है, जब तक पानी सिर से ऊपर नहीं बहने लगता।

हमारी जिंदगी में भी कुछ न कुछ लीक होता ही रहता है। कुछ लीक लीक होने का दर्द झेलकर जिंदगी जी लेते हैं तो कुछ लोग इस चिंता में जिंदगी जीते हैं कि कहीं उनके राज लीक न हो जाएं। सभी की जिंदगी में कुछ न कुछ राज तो होते ही हैं। जब बात राज की चली है तो हमें यह भी पता होना चाहिए कि किस राज की बात हो रही है? राज दो तरह के होते हैं। एक तो वह राज होता है, जिसमें कोई रहस्य छिपा होता है और दूसरा राज वह होता है, जिसे हम हुकूमत कहते हैं। राज पर बात चले और खाज पर बात न हो, ऐसा नहीं हो सकता। कहते हैं राज और खाज का चोली दामन का साथ है। दोनों ही तरह के राज का खाज के साथ घनिष्ठ संबंध है। अगर किसी इंसान को यह पता चल जाए कि उसके मित्र का कोई राज है तो उसे यह खाज लग जाती है कि मित्र का राज पता चलना चाहिए। जब तक मित्र का राज पता नहीं चलता, तब तक उसे खाज लगती रहती है। जब उसे मित्र का राज पता चल जाता है तो उसे दूसरी खाज यह लगती है कि यह राज किस तरह पूरे मुहल्ले को बताया जाए। उसे तब तक चैन नहीं आता, जब तक वह इस राज को पूरे मुहल्ले में लीक न कर दे। दूसरी तरफ जब कहीं किसी भी रूप में इंसान की हुकूमत यानी राज चलता है तो प्रतिद्वंद्वी को यह खाज लगनी शुरू हो जाती है कि राज लीक करके कैसे उसका राज यानी हुकूमत समाप्त कराई जाए।

हमारे मुहल्ले के शर्मा जी यह देखते रहते हैं कि कहां क्या लीक हो रहा है। इसलिए लोग अतिरिक्त सतर्कता बरतते हैं कि शर्मा जी तक कोई बात न पहुंचे, लेकिन शर्मा जी ठहरे लीक एक्सपर्ट। इसलिए उन तक बात पहुंच ही जाती है। एक बार दूसरों के घरों में ताक-झांक करने में शर्मा जी इतने तल्लीन हो गए कि उन्हें यह पता ही नहीं चला कि उनके घर से भी बहुत कुछ लीक हो रहा है। उनके घर से इतना कुछ लीक हुआ कि उनकी नींव ही हिल गई।

राजनीति में तो नई-नई बातें लीक होती रहती हैं। एक बात लीक हो जाती है तो कई दिनों तक उसी पर राजनीति चलती रहती है। पूरी राजनीति लीक होने के सिद्धांत पर ही टिकी हुई है। सत्ता पक्ष चाहता है कि उसके द्वारा शुरू की गई योजनाओं में कुछ लीक न हो, लेकिन विपक्ष अच्छी योजनाओं में भी कुछ न कुछ लीक होने या जानबूझकर लीक करने की संभावना ढूंढ़ता रहता है। राजनीति में कुछ लीक न हो तो राजनीति ही खत्म हो जाएगी। अभी पेपरलीक कांड के चलते देश में राजनीतिक माहौल काफी गर्म है। इस गर्म माहौल में बरसात का मौसम शुरू हो चुका है। ज्यादा बारिश में कच्ची छतों से ही नहीं, सीमेंट की पक्की छतों से भी पानी लीक होने लगता है। कभी-कभी तो ऐसा लगता है कि हमारी जिंदगी तेजी से लीक हो रही है। दुखद यह है कि लीक होती जिंदगी पर कोई चर्चा नहीं होती।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य पिछले वित्त वर्ष में कहां से कितना कच्चा तेल आयात किया भारत ने
(आंकड़े प्रतिशत में)

ऊर्जा

क्षमा

सेहत के लिए स्वस्थ प्राकृतिक पर्यावरण के समान स्वस्थ सामाजिक पर्यावरण भी जरूरी है। इसका निर्माण जिन मानवीय मूल्यों से होता है उनमें क्षमा प्रमुख है। गीता में क्षमा को प्रमुख दैवी संपत्ति कहा गया है, जिसके बिना सर्वगुण संपन्न व्यक्ति भी गंधरहित पुष्प की भांति होता है। क्षमा के बिना धर्म की परिभाषा भी पूर्ण नहीं होती। शास्त्रों ने धर्म के जिन दस लक्षणों का उल्लेख किया है उनमें क्षमा को दूसरा स्थान प्राप्त है। वाल्मीकि रामायण के अनुसार, यह सारा जगत क्षमा में ही प्रतिष्ठित है। क्षमा से बड़ा न कोई तप है, न दान, न कोई यज्ञ है, न अनुष्ठान। क्षमा सभी धर्मों का आधार है। इसीलिए शूली पर लटकाए जाने पर भी प्रभु यीशु ने दोषियों के लिए ईश्वर से क्षमा की याचना की। जैन एवं बौद्ध धर्म का आधार क्षमा है। भगवान बुद्ध के अनुसार अभिमान और क्रोध क्षमा के मार्ग में सबसे बड़ी बाधाएं हैं। ये दोनों मानव मन में क्षमा को उपजने ही नहीं देते। इसके विपरीत सहिष्णुता क्षमा की जन्मदात्री है। सहिष्णु होने से ही धरती के समान क्षमाशील कोई नहीं।

समाज में क्षमा के दो रूप दृष्टिगोचर होते हैं- क्षमायाचना और क्षमादान। क्षमायाचना विनम्रता की सबसे बड़ी पहचान है, जो व्यक्ति को महान बनाती है, किंतु क्षमादान तो देवत्व की प्राप्ति करा देता है। क्षमा मानव जीवन की सबसे बड़ी उपासना है। धनुर्भंग के समय अनुचित बार्तालाप करने पर भगवान परशुराम भी श्रीराम से क्षमायाचना करते हैं। श्रीराम भी क्षमादान देकर उनके कल्याण का मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। मानस में गोस्वामी जी ने क्षमा को शीतलता प्रदायक के रूप में स्वीकार किया है। क्षमा वैरभाव की प्रशामनी है। विलक्षण आंतरिक शक्ति होने से यह अंतर्मन को शीतल कर परम आत्मिक शांति प्रदान करती है। इसीलिए क्षमाशील व्यक्ति यशस्वी एवं दीर्घायु होता है। मनुष्य के व्यक्तित्व की पूर्णता क्षमा में है।

डा. सत्यप्रकाश मिश्र

सूक्ष्म मस्तिष्क से दवाओं का परीक्षण

मुकुल व्यास

विज्ञानियों ने नए विकसित मस्तिष्क के उडी माडल का नाम काइमेराइड रखा है, यह मस्तिष्क के सूक्ष्म अंग का ही एक रूप है

मानव मस्तिष्क के कार्यों का अनुसरण करने के लिए विज्ञानी पिछले कुछ समय से कोशिकाओं से सूक्ष्म मस्तिष्क के माडल विकसित करने की चेष्टा कर रहे हैं। अब उन्हें कई लोगों की कोशिकाओं से सूक्ष्म मस्तिष्क विकसित करने में सफलता मिल गई है। शोधकर्ताओं ने नए विकसित मस्तिष्क के उडी (तीन आयामी) माडल का नाम काइमेराइड रखा है। यह माडल मस्तिष्क के सूक्ष्म अंग का ही एक रूप है। उतक से बना यह माडल पूर्ण आकार के मस्तिष्क की संरचना और कार्य की नकल करता है। यह माडल टडी (दो आयामी) कोशिकीय माडल या प्रयोगशाला के चूहों जैसे जानवरों की तुलना में मानव जीव विज्ञान के लिए अधिक सटीक हैं। इस वजह से विज्ञानियों को उम्मीद है कि यह माडल दवा अनुसंधान और विकास को गति देगा। आमतौर पर मस्तिष्क के सूक्ष्म अंग उन कोशिकाओं से विकसित होते हैं जिन्हें केवल एक दाता से एकत्र किया जाता है। इसका मतलब है कि वे लोगों के बीच मौजूद आनुवंशिक विभिन्नता को नहीं पकड़ सकते, जो व्यक्तियों के मस्तिष्क के विकास और दवाओं के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं को प्रभावित कर सकती है। नेचर पत्रिका में प्रकाशित अध्ययन में विज्ञानियों ने कहा है कि काइमेराइड से इस बाधा को दूर किया जा सकता है। उनका दावा है कि इस तरह के विविधता वाले माडल दवा परीक्षण के शुरुआती चरणों में विशेष रूप से उपयोगी हो सकते हैं।

काइमेराइड बनाने के लिए शोधकर्ताओं ने पांच लोगों से स्टेम कोशिकाएं एकत्र कीं और फिर प्रयोगशाला में वृद्धि-प्रेरक रसायनों का उपयोग करके उन्हें मस्तिष्क के सूक्ष्म अंग में विकसित करने के लिए प्रेरित किया। प्रत्येक सूक्ष्म अंग में केवल एक व्यक्ति की कोशिकाएं थीं। इसके पश्चात विज्ञानियों ने सूक्ष्म अंग को अलग किया और उनके भीतर की कोशिकाओं को फिर से जोड़कर काइमेराइड बनाए। इससे यह सुनिश्चित हुआ कि प्रत्येक काइमेराइड में प्रत्येक व्यक्ति से प्राप्त समान संख्या में कोशिकाएं हों। तीन महीने बाद काइमेराइड का व्यास लगभग तीन से पांच मिलीमीटर था और उनमें सभी समान प्रकार की कोशिकाएं थीं, जो सामान्य रूप से भ्रूण के कार्टेक्स (मस्तिष्क की सबसे बाहरी परत) में पाई जाती हैं।

शोधकर्ताओं ने अलग से काइमेरोइड की दो न्यूरोटाक्सिक (विषाक्त) रसायनों, इथेनोल और वैल्प्रोइक एसिड के संपर्क में रखा। टीम ने पाया कि अलग-अलग दाताओं से प्राप्त कोशिकाएं इन दवाओं के प्रति अलग-अलग प्रतिक्रिया करती हैं। काइमेराइड सैद्धांतिक रूप से यह निर्धारित करने में मदद कर सकते हैं कि नैदानिक जांच में परीक्षण किए जाने से पहले मरीज दवाओं पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे। इसके पश्चात उन्हें विशिष्ट उपचार प्रतिक्रिया समूहों में अलग किया जा सकता है।

(लेखक विज्ञान के जानकार हैं)

राजरंग

जैसे को तैसा

हाल में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कांग्रेस को स्पष्ट चेतावनी दी कि अब उसको उसकी ही भाषा में जवाब दिया जाएगा। इसे देखते हुए भाजपा के प्रवक्तागण भी तैयारी में जुट गए हैं। कुछ दिनों में फिर से संसद सत्र की शुरुआत होने वाली है। उसके बाद लगातार कई राज्यों में चुनाव होने वाले हैं। सो तय है कि गरमा-गरमी बनी रहेगी। यही वह वक्त होगा जब प्रवक्ताओं को अपनी क्षमता भी दिखानी होगी। लिहाजा सभी प्रवक्ता ऐसे मुद्दे की तलाश में गहनता से जुटे हैं जिन पर बहस के दौरान कांग्रेस को हराया जा सके। दरअसल आम चुनाव के नतीजों के बाद से विपक्ष का तेवर आक्रामक है। पराजित होने के बावजूद उसका रवैया जीते हुए खिलाड़ी जैसा है और इसी क्रम में तीखे और व्यक्तिगत आरोप लगा रहा है। गत दिनों संसद में प्रधानमंत्री के बहुत तल्ख पलटवार से भाजपा के प्रवक्तागण यह संकेत ले चुके हैं कि विपक्ष को हर मुद्दे पर घेरना है।

प्यास कैसे बुझे

दिल्ली में हाल के दिनों में पानी की मारामारी थी। वह तो खैर राजनीतिक जंग में उलझकर रह गई, पर नए संसद भवन का हाल भी कुछ बहुत अलग नहीं है। संसद के पुराने भवन में भी अक्सर पत्रकारों को पानी के लिए किसी न किसी मंत्री के दफ्तर तक दौड़ लगानी पड़ती थी। नए संसद भवन में बाकी तो सबकुछ बदला, लेकिन सामान्य लोगों के लिए पानी का इंतजाम नहीं है। पहले तो पानी का नल ढूंढ़ना मुश्किल है। अगर मिल जाए तो संतुष्ट होकर पीना मुश्किल, क्योंकि वहां एयरपोर्ट स्टाइल के नल हैं, जो कि हमारे घरों में लगे नल से अलग होते हैं।

सांकेतिक लड़ाई

संसद में विपक्षी दलों ने जिस तरह सीटें सजाई हैं वह देखने में रोचक है। पहली मेज पर दूसरे नंबर की सीट पर के. सुरेश को बैठाया है, जो केरल से आते हैं और जिन्हें लोकसभा अध्यक्ष के चुनाव के लिए उतारा तो गया था, लेकिन विपक्षी दलों ने वोटिंग की मांग नहीं की। यानी संकेतों में यह कह दिया कि वे उन्हें लोकसभा अध्यक्ष बनाना चाहते थे। उन्हें दस सीट पर बैठाया जा रहा है, जो नेता विपक्ष की सीट होती है। राहुल गांधी की बगल वाली मेज पर अखिलेश यादव बैठते हैं। साथ में फैजाबाद से जीतने वाले सपा सांसद अवधेश प्रसाद को बैठाया जा रहा है।

समय की चूक

कहावत है कि डाल के चूके बंदर और समय के चूके इंसान को बाद में पछताना ही पड़ता है। हाल में संसद सत्र के दौरान राज्यसभा में ऐसा ही एक नजारा देखने को मिला, जिसके बाद सांसद महोदय को पछताना पड़ा। हुआ यह है कि राज्यसभा में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर धन्यवाद प्रस्ताव को लेकर चर्चा के दौरान शिवसेना (उद्धव गुट) के सांसद संजय राउत को भी बोलने का मौका मिला। उन्हें करीब तीन मिनट का समय मिला था, जिसमें उन्हें अपनी पूरी बात रखनी थी, लेकिन वह जैसे बोलने के लिए खड़े हुए और कुछ बोले ही थे कि दूसरी ओर से टोका-टाकी शुरू हो गई। वह अपनी बात रखने के बजाय उस टोका-टाकी में उलझ गए। जैसे ही वह फिर से अपने मूल विषय की ओर लौटे तो समय समाप्त होने की घंटी बज गई। पहले तो वह भड़के और कहा कमाल है-अभी तो बोलना शुरू ही नहीं किया है और समय खत्म हो गया। इस पर उपसभापति ने भी उन्हें नसीहत दी और कहा कि आपको जो समय मिला था उसी में गागर में सागर भरना था। इसके बाद उन्होंने दूसरे सदस्य को बोलने का मौका दे दिया गया। फिर क्या, वह कापर्ट देर तक अपनी सीट पर खड़े रहे और हाथ मलते दिखे। सत्ता पक्ष भी उनके इस हाल पर चुटकी लेते दिखा।

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।
****